संजय की कलम से ..

ईश्वर चिन्तन के लाभ

ईश्वर के स्वरूप के मनन से ईश्वर से जो संपर्क होता है, सो तो होता है ही, पर इसके अतिरिक्त भी इसके बहुत-से लाभ हैं। एक लाभ यह है कि प्रभु के गुण-चिन्तन की टेव पड़ जाने से मनुष्य गुण-ग्राहक वृत्ति वाला हो जाता है; वह संसार में दूसरे मनुष्यों से जब व्यवहार करता है तो उनके भी गुणों ही की ओर उसकी दृष्टि जाती है। अब अवगुणों पर ध्यान देने का उसका स्वभाव नहीं रहता।

दूसरे, ऐसा भी प्रभाव होता है जैसा कि मैग्नेटिक टेप (Magnetic Tape) के निकट बैठ कर बोलने से होता है। सभी जानते हैं कि टेप मशीन पर टेप लगा कर, उसके माइक्रोफोन को ऑन (On) कर लेने पर जब हम बोलते या गाते हैं तो पहले का रिकॉर्ड किया हुआ गीत मिटता जाता है और उसकी जगह नया गीत भरता जाता है। इसी प्रकार, प्रभु के गुण चिन्तन से भी मनुष्य के पिछले तमोगुणी संस्कार मिटते जाते हैं और उनके स्थान पर अब दिव्य गुण भरते जाते हैं। इसलिये ही किसी ने कहा है कि 'मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बन जाता है (As you think, so shall you become)।' मनुष्य का विचार ही तो उसके व्यवहार और आचार की आधारशिला है।

प्रभु-चिन्तन से एक लाभ यह भी होता है कि मनुष्य का मन चिन्ताओं से निवृत्त हो जाता है। आज संसार में लाखों-करोड़ों नर-नारी किसी-न-किसी बात के कारण चिन्तित रहते हैं। परन्तु सही तरीके से प्रभु-चिन्तन करने वाला मनुष्य निश्चिन्त हो जाता है क्योंकि एक तो मानसिक संतुलन होने के कारण उसे समस्या का हल ठीक रीति से दिख जाता है और उसमें आत्मविश्वास भी बना रहता है। दूसरे, वह सोचता है कि प्रभु मेरे सहायक एवं मार्ग-प्रदर्शक हैं; मेरा उनसे और उनका मुझसे अनन्य प्यार है; अतः हिम्मत मैं करूँगा, मदद (सहायता) परमात्मा करेंगे; फिर जो होगा सो देखा जाएगा। ईश्वर-विश्वासी तथा नास्तिकों में एक यह भी तो महान अन्तर है कि ईश्वर विश्वासी लोगों को ईश्वर का सहारा होता है परन्तु अनीश्वरवादियों को कोई स्थायी सहारा नहीं होता। इस निश्चय की कमी से, अन्त में, संसार के आधार टूटने पर उनका मन टूट जाता है और वे अपार मानसिक दुख अनुभव करते हैं जबकि प्रभु-प्रेमी उसे अपना एक प्रेमी, सहायक, संरक्षक एवं सहयोगी मानता है; इससे उसका मानसिक संतुलन तथा उसकी भावात्मक (Emotional) स्थिरता बनी रहती है। क्या यह कोई कम प्राप्ति है? ❖

अमृत-सूची

◈ एक महातपस्वी का महाप्रयाण (सम्पादकीय)................. 2
◈ पुरुषोत्तम संगमयुग एवं......... 5
◈ 'पत्र' सम्पादक के नाम 8
◈ कुएँ से निकल सागर की ओर. 9
◈ बड़ा दिन (कविता)........... 11
◈ असत्य से सत्य की ओर......12
◈ अशान्ति का मूल कारण......15
◈ मेरे प्यारे बाबा (कविता)...... 16
◈ सच्ची मानवता............... 17
◈ विषयासक्ति महान विघ्न..... 18
◈ मुरली........................ 19
◈ ईमानदारी का मीठा फल..... 20
◈ शरीर आत्मा का वाहन है.... 21
◈ जीवन संघर्ष नहीं, हर्ष है..... 24
◈ धूल में छिपा हीरा............ 25
◈ सचित्र सेवा समाचार......... 28
◈ बरसों के झगड़े, पल में.......30
◈ आइये, रामराज्य की ओर.... 31
◈ सचित्र सेवा समाचार......... 32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	70 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	70/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -

09414006904, 09414154383

सम्पादकीय

एक महातपस्वी का महाप्रयाण

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आदि स्थापना काल की आदि रत्न, यज्ञ की वफादार नेत्री, यज्ञ इतिहास को शब्दों द्वारा प्रत्यक्ष की न्यायीं दिखा देने वाली, स्नेही व्यवहार से सबके मन को हरकर उसे परमात्मा से जोड़ देने वाली, मिलनसारिता के गुण की धनी, राजयोग रूपी महातपस्या में रत रहते हुए देश-विदेश की लाखों आत्माओं को आध्यात्मिकता के मार्ग पर उड़ाने वाली राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी ने 17 नवंबर, 2008, दोपहर 12 बजकर 30 मिनट पर पार्थिव देह का त्याग कर अव्यक्त स्वरूप को धारण कर लिया।

आपका जन्म सन् 1923 में सिन्ध-हैदराबाद में हुआ। आपका घर दादा लेखराज (प्रजापिता ब्रह्मा) के घर के पास ही था। उस बाल्यावस्था में आपका दादा के घर आना-जाना, पारिवारिक समारोहों में शामिल होना चलता रहता था। बाल्यकाल से ही आप प्रभु प्राप्ति की इच्छुक और बहुत ही सात्विक विचारों की थीं। इसी कारण आपको दादा के घर का आश्रम जैसा सात्विक वातावरण बहुत ही आकर्षित करता था। जब दादा को दिव्य साक्षात्कार हुए और वे ईश्वरीय कर्त्तव्य के निमित्त बने तब आपको भी गहन ईश्वरीय अनुभूति हुई और 12 वर्ष की उस अल्पायु में आपने भी अपने जीवन को ईश्वरीय कार्य में सफल करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

जब कोई भी नया कार्य शुरू होता है तो विरोधों का सामना तो करना पड़ता ही है। ईश्वरीय जीवन की श्रेष्ठ धारणाओं का भी उस समय के समाज में विरोध हुआ और आपको भी पारिवारिक विरोधों का सामना करना पड़ा परन्तु आप हिमालय की तरह अडिग रह ईश्वरीय मार्ग पर आगे बढ़ती रहीं। बाद में अपनी माताजी से स्वीकृति-पत्र लेकर आप बाबा द्वारा स्थापित 'यज्ञ' में पूर्णरूपेण समर्पित हो गईं। पाँच वर्ष बीतने पर आपको बाबा ने हैदराबाद स्थित आपके लौकिक परिवार की सेवार्थ भेजा। आप बाबा द्वारा बताए गए नियम-संयम का पालन करते हुए अपने उन लौकिक संबंधियों का दिल जीतने में पूर्ण सफल रहीं जिन्होंने कुछ वर्ष पहले आपका विरोध किया था। आपकी एकाग्रता, तपस्या, सात्विकता तथा एकनिष्ठ ईश्वरीय लगन का आपकी माताजी पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा और वे भी वापसी में आपके साथ कुछ दिन के लिए यज्ञ में आईं।

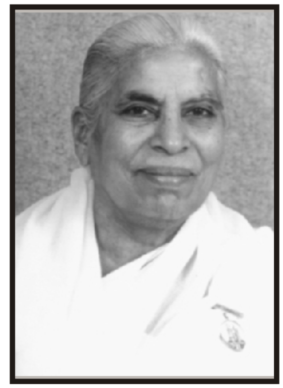

चौदह वर्षों तक कराची में समुद्र के किनारे अखण्ड राजयोग तपस्या कर अपने व्यक्तित्व को कुन्दन की तरह दमकाने वाली सैकड़ों बहनों में दादी जी भी अग्रणीय भूमिका में रहीं। तत्पश्चात् सन् 1950 में यह हंसों का टोला भारत में आबू पर्वत पर तपस्यारत हुआ। कुछ समय बीतने पर पिताश्री के आदेश पर आप ईश्वरीय सेवार्थ भारत की राजधानी दिल्ली में पधारीं। वहाँ आपने बहन इंदिरा गांधी जी तथा तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी को ईश्वरीय संदेश तथा आबू पधारने का निमंत्रण दिया। देहली में अन्य भी भिन्न-भिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाएँ कीं।

आप यज्ञ पिता, यज्ञ माता की सदा लाडली रहीं। आपके गुणों और विशेषताओं का वर्णन करना जैसे सूर्य को दीपक दिखाना है। ईश्वरीय महावाक्यों में जब भी कभी सर्विसएबुल बच्चों के नामों का वर्णन

आता है आपका नाम पहले नम्बर पर होता है।

त्याग-तपस्या की जीवंत मिसाल

कम साधन होते हुए भी आप साधना की धनी थीं, त्याग और तपस्या की जीवंत मिसाल थीं। यमुना के कंठे पर बैठकर बिना किसी साधन-सुविधा के आपने ईश्वरीय सेवाओं का प्रारंभ किया। पतित-पावनी बन अनेक आत्माओं का उद्धार किया। ईश्वरीय नियम और मर्यादाओं के पालन में सदा तत्पर थीं। कड़ी से कड़ी परिस्थितियों को भी योगबल से जीत लेती थीं। चाहे यज्ञ का 'बेगरी पार्ट' (अभाव का समय) रहा, चाहे नए-नए स्थानों पर ईश्वरीय संदेश देने का चुनौतीपूर्ण कार्य, सभी में आप हिम्मत के साथ सफलता का परचम लहराती रहीं। आपके कदमों के निशां देख-देख चलने वालों का एक लंबा काफिला है।

अलौकिकता तथा रूहानियत से सदा संपन्न

पिताश्री के प्रति आपके मन में अटूट, अगाध श्रद्धा थी। उनके द्वारा उपदेशित हर अभियान के प्रति आपका सदा हाँ जी का पाठ रहा और उसे सफल बनाने में आप सदा सक्षम रहीं। आपकी दृष्टि में अलौकिक जादू था। योग कराते समय आपकी दृष्टि पड़ने पर भाई-बहनें ध्यान में चले जाते थे। ऐसी रूहानियत और अलौकिकता से संपन्न थीं आप। पंजाब और हरियाणा में विभिन्न स्थानों पर और विशेष करनाल में बहुत समय तक आपने सेवायें दीं। अनेक कुमारियाँ आपके स्नेह की पालना से खिंचकर ज्ञान में आईं, आदर्श ब्रह्माकुमारियाँ बनीं और अब भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवायें दे रही हैं।

नम्रता की मूर्त

आप सदा निमित्त और नम्रचित्त बन कर रहीं। अपने सरल स्वभाव की छाप हरेक के दिल पर डाली। आपसे मिलना बहुत सहज था। कोई भी सरल भाव से आपके पास पहुँच सकता था। आप हरेक पर स्नेह लुटाती और वरदानी दृष्टि, वरदानी बोल से भरपूर कर देती थीं। आप न कभी किसी से टकराव में आई और न ही प्रभाव में आईं। 'एक बाबा दूसरा न कोई' इस महामंत्र में सबका विश्वास बिठाया। आप बहुत ही रमणीकता से हरेक से बातचीत करती थीं। कभी भी आपको उदास, चिंतित या सोचने के मूड में नहीं देखा। आप यज्ञ के इतिहास का ऐसे वर्णन करती थीं जो सुनने वाले के मन के पर्दे पर सारे चित्र क्रमवार उभरने लगते थे। आपकी स्मृति इतनी अच्छी थी कि यज्ञ की स्थापना कैसे हुई, यज्ञ आगे कैसे बढ़ा, कौन कब यज्ञ में समर्पित हुआ, बाबा और मम्मा की क्या-क्या लीलाएँ चलीं – वे सब तिथि-तारीख सहित सुनाती थीं। आपके शब्द मानो नये-नये भाई-बहनों के लिए नेत्र बन जाते थे जिनसे वे बाबा और मम्मा का साकार अनुभव करते थे।

निश्चिन्त और निर्भय

आपके प्रवचन में सदा ही एक लय और मिठास रही जो सुनने वाले के हृदय पर छप जाता था। आप यज्ञ के पुराने गीत बहुत रमणीकता से गाती थीं। किसी भी परिस्थिति में आपके चेहरे पर कभी भी प्रश्नवाचक चिन्ह नहीं आया। 'बाबा बैठा है, सब ठीक होगा', इस अटूट विश्वास से सदा निश्चिन्त और निर्भय रहीं। आपने कभी किसी की बात को दिल पर नहीं रखा, कोई कुछ बोल भी जाता था तो भी आप उसे निर्दोष भावना से ही देखती थीं। कभी भी कटु और कठोर वचन आपने नहीं उच्चारे। आपकी निश्छल भावनाओं का प्रभाव चारों ओर वायुमण्डल में फैला रहता था इसलिए किसी को आपसे भय नहीं लगता था।

अपनेपन की भासना

आप जितनी बापदादा की, दादियों की प्रिय थीं उतनी ही सारे ब्राह्मण परिवार की भी प्रिय थीं। आपसे सभी को अपनेपन की भासना आती थी। हरेक को रूहानी प्यार की अनुभूति कराते भी आप सदा न्यारी रहती थीं। हरेक की विशेषताओं को देख उन्हें सेवा में लगाती थीं। उनकी प्रशंसा करके बाबा के कार्य में मददगार बना देती थीं। कोई में कोई कमी भी होती थी तो उसका वर्णन नहीं करती थी बल्कि और ही स्नेह

देकर गुणवान बना देती थीं।

सदा हर्षितमूर्त

आप सदा सर्व के प्रति कल्याण भावना से भरपूर और हर्षितमूर्त थीं। आपके स्नेही बोल और सहयोग की भावना हर आत्मा को सदा निश्चिंत बना देती थी। आपने सर्व ब्रह्मावत्सों का तथा अन्य संपर्क वालों का दिल, अपने प्यार और सत्कार-भाव से जीता। सेवा में सदा अथक रहीं। निमित्त दादियों के साथ मिलकर यज्ञ-सेवा के हर कार्य में आपका सदा अमूल्य योगदान रहा। बाबा के नए-नए फूलों में उमंग भरकर उन्हें आगे बढ़ाने की कला में आप सिद्धहस्त थीं। एकनामी और इकानामी के पाठ में आप स्वयं भी बहुत पक्की थीं और दूसरों में भी यह धारणा भर देती थीं। भूलों को भुलाकर गले से लगाने वाली आप मास्टर क्षमा का सागर थीं। ईश्वरीय रत्नों में पालना देकर आध्यात्मिक मार्ग पर समर्थ बना देने की सेवा आप अहर्निश करती रहीं।

दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा भारत के विभिन्न अन्य भागों की सेवा कर, सन् 1970 में आप मुख्यालय निवासी बनीं। मुख्यालय में रह आपने अनेक जिम्मेवारियाँ संभालीं। आप महिला प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा रही। राजयोग शिविरों की भी आप मुख्य निदेशिका रहीं। टीचर्स ट्रेनिंग में आपका सक्रिय योगदान रहा। आप ब्रह्माकुमारीज़ की मैनेजमेंट कमेटी

की मेम्बर थीं। ब्रह्माकुमारीज़ एज्युकेशनल सोसायटी के गवर्निंग बोर्ड की मेम्बर थीं। राजयोग एज्युकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन की मेम्बर ऑफ गवर्निंग बॉडी थीं। सन् 1997 से आप ज्ञान सरोवर अकादमी की निदेशिका रहीं। आपने अनेक विदेश यात्राएँ कर अनेक देशों के बहन-भाइयों को आध्यात्मिकता से सींचा।

जब भी कोई आपके समक्ष गया, आपकी ममता भरी मुस्कान के स्पर्श से तन-मन में उमंग भरकर ही लौटा। किन शब्दों में वर्णन करें आपकी महिमा का! आप जीवंत मुस्कान और प्रभु का वरदान थीं।

यह श्रद्धानत लेखनी आपकी अनन्त महिमा के सागर में दो बूंद श्रद्धांजलि के भेंट करने की कोशिश में लगी है। भावनाओं का सागर थामे नहीं थम रहा। आपके महान, श्रेष्ठ, दिव्य कर्मों की यादों का ज्वार हिलोरें मार रहा है। आपने मन, वचन, कर्म से जो अमूल्य देन मानवता को दी है, वह स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। आपकी आभा पर पड़ा भौतिक आवरण हट चुका है। आप में समाहित सत्य, प्रेम, पवित्रता, दिव्यता का प्रकाश धरती और गगन को प्रकाशित करता हुआ तीनों लोकों में फैल रहा है। आप हमारी थीं, हमारी हैं और हमारी रहेंगी। आवरण को उतार आप ससीम से असीम हो गई हैं। अब अव्यक्त वतन में, अव्यक्त रूप में आपकी छवि निहारा करेंगे और आपकी अविस्मरणीय साकार यादों की अमूल्य धरोहर को हृदय से लगाए आपके चरण-चिन्हों का अनुकरण करते रहेंगे।

हे विश्ववंदनीय दादी माँ,
आपको शत् शत् नमन!

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं आर्थिक (अ)व्यवस्था की आंधी

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

शिवपिता परमात्मा ने हम सबको सृष्टि-चक्र का ज्ञान दिया है और विश्व परिवर्तन की बातें बताई हैं। साथ ही हमें 'तीन' की संख्या का महत्त्व दर्शाने वाली बहुत ही लाभदायी बातें भी बताई हैं जैसे, त्रिलोक अर्थात् मूलवतन, सूक्ष्म वतन और स्थूल वतन, तीन पिता अर्थात् पारलौकिक पिता, अलौकिक पिता और लौकिक पिता। उसी तरह से त्रिनेत्री अर्थात् दो स्थूल नेत्र और तीसरा ज्ञान का नेत्र और यह भी बताया है कि विश्व परिवर्तन के निमित्त तीन कारण बनेंगे : 1. कुदरती आपदाएँ 2. अन्तर्राष्ट्रीय अणुयुद्ध 3. गृहयुद्ध। पुरुषार्थ के लिए भी तीन चीज़ें मुख्य हैं – तन, मन और धन। इन तीनों के द्वारा उन्नति भी होती और तीनों के द्वारा पतन भी होता। तन की उन्नति के लिये शारीरिक श्रम और व्यायाम है तो मन की उन्नति के लिये राजयोग है और धन की वृद्धि के लिये व्यापार है।

पहले सोने या चांदी के सिक्कों के रूप में ही धन की लेन-देन होती थी। बाद में कागज़ के नोटों का निर्माण हुआ। शुरू में विभिन्न सरकारें जितने कागज़ के नोट छापती थी उतना सोने या चांदी का स्टॉक भी रखती थी। बाद में कई सरकारों ने ज्यादा संख्या में कागज़ के नोट छापकर कागज़ के धन का निर्माण किया। जब तक सोने या चांदी के सिक्कों रूपी धन था तब तक धन की व्यवस्था सुचारु रूप से चली परंतु कागज़ के नोटों के कारण आर्थिक अव्यवस्था का दौर शुरू हुआ।

सन् 1922 तक मनुष्य के पास जितना धन था उतनी ही उसकी क्रयशक्ति थी अर्थात् एक व्यक्ति के पास यदि 1,000 रुपये थे तो 1,000 रुपये तक की ही चीज़ें वह खरीद सकता था परंतु सन् 1922 में व्यापारियों ने बैंकों के साथ मिलकर व्यापार की नई रस्म शुरू की जिसको किश्त भुगतान पद्धति (Payment by Instalments) कहते हैं। किश्तों के आधार पर 100 रुपये होंगे तो भी 1,000 रुपये की चीज़ें व्यक्ति खरीदेगा, बाकी के 900 रुपये किश्तों में चुकायेगा। इस पद्धति के कारण चीज़ों की मांग बढ़ी और उसके कारण उत्पादन बहुत बढ़ा। बाज़ार में माल ज्यादा आने लगा और यह कार्य पद्धति सन् 1929 तक चली। तब तक लोगों ने ज़रूरत की चीज़ें खरीद ली थीं, परिणामस्वरूप सन् 1930 में मांग बहुत कम हो जाने के कारण ज़बरदस्त मंदी आ गई। इस आर्थिक अव्यवस्था के कारण अनेक बैंक तथा औद्योगिक गृह भी दिवालिया बन गए। लोगों के पास किश्त देने के लिए भी पैसे नहीं रहे, कइयों के पास तो अन्न खरीदने का भी धन नहीं रहा और आत्महत्याएँ भी बहुत हुईं।

तब अर्थशास्त्रियों ने 'सामाजिक न्याय और कल्याण, सरकार की जिम्मेवारी है', ऐसे सिद्धांत का प्रतिपादन किया और विभिन्न सरकारों ने लोगों के कल्याणार्थ बड़ी-बड़ी परियोजनाएँ बनाकर उनकी क्रय-शक्ति बढ़ाई। इससे धीरे-धीरे आर्थिक अव्यवस्था में सुधार हुआ। सरकारों ने लोगों से ही धन उधार लेकर सामाजिक कल्याण का कारोबार करना शुरू किया और उतने में ही द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हुआ जिसके परिणामस्वरूप फिर से चीज़ों की मांग बढ़ गई तो साथ-साथ शस्त्रों को खरीदने के लिए भी सरकारों ने धन की मांग बढ़ा दी और आर्थिक संकट कम हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सारी दुनिया तीसरे विश्वयुद्ध की छाया में सतत् रहती थी। हर स्थान पर छोटे युद्ध होते रहते थे और लोगों को डर था कि तीसरा विश्व युद्ध होगा और उसी के कारण गरीब, अमीर सभी देशों ने शस्त्रों की खरीद के लिए धन का व्यय करना शुरू किया। भारत जैसा गरीब देश भी शस्त्रों की खरीद के पीछे अपनी राष्ट्रीय आय का काफी भाग खर्च करने लगा परन्तु धन की कमी का सामना करना पड़ा और इसलिए भारत को भी बहुत नया कर्ज़ लेना पड़ा

धनवान राष्ट्रों में महंगाई बढ़ गई, परिणामस्वरूप उद्योग कार्यशील नहीं

रहे। मिसाल के तौर पर, अमेरिका में एक बढ़ई को एक दिन की 150 डॉलर अर्थात् 7,000 रुपये की कमाई होने लगी परंतु उसकी 7,000 रुपये जितनी उत्पादन शक्ति नहीं थी, इस कारण अमेरिका से आर्थिक संकट शुरू हुआ। उसे गरीब देशों से ज्यादा चीज़ों का आयात करना पड़ा। बैंकों में बहुत धन इकट्ठा हो गया तो लोगों को मकान खरीदने के लिए कर्ज़ में धन देना शुरू किया जबकि बैंकों का मुख्य कर्त्तव्य था, उद्योगों को ज्यादा धन देकर औद्योगिक वृद्धि करना। जब मकानों के लिए बैंक से पैसा मिलने लगा तो मकानों की कीमत भी बहुत बढ़ गई, परिणामस्वरूप बैंकों ने और भी धन देना शुरू किया और इतना धन दिया कि लोग किश्तों के रूप में पैसे वापस देने में असमर्थ बन गए।

तब सारे विश्व में आर्थिक संकट की छाया पड़नी शुरू हुई और उसमें भी अक्तूबर, 2008 में अमेरिका का सबसे बड़ा व्यापारिक बैंक Lehman Bro. ने दिवाला निकाला और ऐसे ही दूसरे बैंक Meril Linch Co. भी दिवाले में गई। Lehman Bro. के कारण दुनिया के कई देशों के बैंकों को नुकसान हुआ। भारत के भी एक बैंक को अनुमानत: 800 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। ताश के पत्तों के महल मुआफिक अमेरिका के करीबन 45 बैंक खत्म हो गये। अमेरिका में बैंक प्राइवेट सेक्टर में हैं इस कारण लोगों के पैसे डूब गये। अमेरिका की सरकार ने आर्थिक अव्यवस्था की समस्या को दूर करने के लिए 700 अरब डालर अर्थात् 33,600 अरब रुपये की सहायता देने का तय किया है। इंग्लैंड की सरकार ने भी अपने देश के बैंकों और उद्योगों की मदद करने के लिए 500 अरब पौंड अर्थात् 41,000 अरब रुपये की सहायता देने का ऐलान किया है और बैंकों को डूबने से बचाने के लिए आठ बड़े-बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया है। चीन की सरकार ने भी आर्थिक संकट दूर करने के लिए 570 अरब डालर अर्थात् 27,360 अरब रुपये की आर्थिक सहायता का कारोबार शुरू किया है। अन्य भी कई देशों की सरकार व बैंक दिवालिया हो गये हैं। उदाहरण के लिये आइसलैंड देश की आर्थिक व्यवस्था तथा बैंक, जो एक समय में आर्थिक रूप से बहुत मजबूत थे, उनका भी दिवाला निकल गया। भारत सरकार ने भी थोड़े कदम उठाए और 1,30,000 करोड़ रुपये की मदद बैंकों को देने के लिए कारोबार शुरू किया है। भारत के लोगों ने पैसे का खर्च कम करने के लिये ऐशो-आराम की चीज़ें खरीदना कम कर दिया, परिणामस्वरूप हवाई जहाज़ के द्वारा सफर कम हो गया, मोटरकार खरीदना भी कम हो गया। इस प्रकार से भारत की विमान कंपनियों को 10,000 करोड़ का नुकसान हुआ है और काफी अन्य उद्योगों को बहुत नुकसान हुआ है। शेयर बाज़ार में भी कइयों के दामों में 75% तक कटौती हुई।

ऊपर लिखे गए आंकड़ों के आधार पर समझा जा सकता है कि आर्थिक अव्यवस्था का संकट कितना भारी है। यह संकट अचानक शुरू हुआ है और आगे कितना बढ़ेगा, कितनों को नुकसान पहुँचायेगा, यह तय नहीं है। इस संकट के कारण देश-विदेश में लाखों लोगों की नौकरी से छंटनी शुरू हो गई है। लोग नौकरी की तलाश में चारों ओर भटकने लगे हैं। अमेरिका की सारी आर्थिक व्यवस्था लोगों द्वारा किए जाने वाले खर्च के आधार पर चलती थी। बेकारी के कारण आमदनी खत्म हो गई तो खर्च कहाँ से करें, यह समस्या हो गई है। बैंक डूब रहे हैं तो धन कहाँ रखें? इसलिए वर्तमान में अमेरिका में सबसे ज्यादा मांग दो चीज़ों की हो गई है। एक तो धन रखने के लिए तिजोरियाँ और दूसरा, धन की सुरक्षा के लिए राइफल और बंदूक आदि खरीद रहे हैं। बाज़ार में तिजोरियाँ और बंदूकें नहीं मिलती, ऐसी विकट परिस्थिति हो गई है।

उत्पादन कम हो गया क्योंकि मांग कम हो गई है। वैश्विक स्तर पर सीमेंट का उत्पादन 10% कम हो गया है और लोहे का उत्पादन 15% कम हो गया है। विचित्र प्रकार की अनेक समस्याएँ, आर्थिक अव्यवस्था की आँधी के कारण समाज में हुई हैं। अब

तो सिर्फ धन की ही अव्यवस्था शुरू हुई है परंतु आगे चलकर, जैसे कि प्यारे शिव बाबा ने बताया है, प्रकृति के पाँच तत्व भी उग्र स्वरूप दिखाएंगे। भूकंप, अतिवृष्टि, अकाल आदि की समस्याएँ शुरू हो जाएंगी। इस लेख के साथ सन् 2004 में छपे लेख के अंश प्रकाशित किए जा रहे हैं जिनसे मालूम पड़ेगा कि भूकंप के कारण क्या-क्या समस्याएँ समाज में निर्मित होंगी। सन् 2004 के मई अंक के कुछ अंश –

''संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व बैंक द्वारा, दुनिया के सभी देशों की विभिन्न प्रकार की आपत्तियों और आर्थिक संकट का विश्लेषण कर जो रिपोर्ट बनवाई, उसमें भारत के विषय में लिखा है कि भारत के मुख्य 31 राज्यों में से 22 राज्य घोर विपत्तियों से अति प्रभावित होने वाले हैं। यहाँ की 55 प्रतिशत भूमि संभावित भूकम्प से प्रभावित है, 8 प्रतिशत भूमि चक्रवातों से प्रभावित होने वाली है एवं 5 प्रतिशत भूमि बाढ़ से प्रभावित होने वाली है। जब प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की माउंट आबू और आबू रोड स्थित चल-अचल संपत्ति का बीमा कराया जाता है तो माउंट आबू भूकंप पीड़ित इलाका होने के कारण बीमा कंपनी अतिरिक्त अधिभार (Extra Surcharge) ग्रहण करती है। माउंट आबू का यह वैज्ञानिक तथ्य सबको याद रहे। इस प्रकार भारत का 68 प्रतिशत अर्थात् 2/3 भूभाग घोर विपत्तियों की छाया में रहने वाला है। आगे विश्व बैंक ने यह भी लिखा है कि भारत की केन्द्र सरकार की आय का 12 प्रतिशत इन घोर विपत्तियों के कारण बरबाद होता है। उन्होंने यह भी बताया है कि गुजरात के भूकंप के कारण लगभग 6,550 लाख डालर के उत्पादन का नुकसान हुआ, उसके बाद उसके कारण से प्रतिवर्ष भारत की कुल आय का 1 प्रतिशत नुकसान चलता आ रहा है। गुजरात राज्य को उसके कारण 2.2 बिलियन डालर का नुकसान हुआ।

दुनिया के 55% मकान भूकंप को सहन करने के लिए ताकत वाले नहीं हैं। उद्योग सब खत्म हो जायेंगे क्योंकि उद्योगों को बैंकों ने पैसे दिए हैं, बैंक भी निष्फल हो जाएंगे। भूकंप में मकान आदि गिरने के कारण बीमा कंपनियों के पास लोग दावा करेंगे परंतु बीमा कंपनियाँ दावों को चुकता करने के लिए असमर्थ होंगी। आर्थिक अव्यवस्था के घोर संकट के समय पर शिव बाबा के ही ज्ञान का सहारा होगा इसलिए शिव बाबा ने कई बार कहा है कि बच्चे, अपने धन को सफल करो, अपने जीवन को सफल करो। शिव बाबा ने हरेक को यह भी कहा है कि अपने पास अन्न और अन्य ज़रूरत की चीज़ों का स्टॉक भी रखो।

ऐसी अनेक प्रकार की समस्याएँ आगे चलकर आने वाली हैं इसलिए पूर्व पहचान देने के लिए मैंने यह विषय लिया है। मेरी तो यह भावना है कि दैवी परिवार के सभी बहन-भाई आर्थिक अव्यवस्था की समस्या का अच्छी रीति सामना करें और इस विश्व परिवर्तन के कार्य में विनाश की आदि अर्थात् अंत की आदि और सतयुगी सृष्टि की आदि की आदि के कार्य में सफल रहें। अक्तूबर, 2008 में इतनी घोर आर्थिक विपत्ति आई है, यह सिद्ध करती है शिव बाबा के उस महावाक्य को कि अब जो भी होगा, अचानक ही होगा। इस अचानक की समस्या का सामना करने में दैवी परिवार के बहन-भाई सक्षम बनें।

अब तक हमारी जो भी ईश्वरीय सेवाएँ चल रही हैं वे शांति के समय की सेवायें हैं परंतु ऐसी आर्थिक व अन्य प्रकार की समस्याओं के समय, अशांति के समय क्या-क्या सेवायें होनी चाहिएं उसके लिए हमारे पास किसी साधन तथा साधना का निर्माण नहीं हुआ है, यह वास्तविकता है। अत: हमारे बहन-भाइयों को अशांति के समय की ईश्वरीय सेवाओं के निर्माण के लिए भी पुरुषार्थ करना चाहिए क्योंकि ऐसी अशांति के समय ज्यादा से ज्यादा ईश्वरीय सेवायें हो सकती हैं। आर्थिक अव्यवस्था की समस्या की आँधी, अगर हम पुरुषार्थ करें तो हमारे श्रेष्ठ भाग्य के निर्माण के निमित्त बन सकती है परंतु याद रहे, जो करेगा सो पायेगा। ❖

परिस्थितियों में भी प्रगति का आधार है परमात्मा पर दृढ़ निश्चय

‘पत्र’ संपादक के नाम

‘सम्मान के पात्र हैं वृद्ध’ अक्तूबर 08 का यह लेख पढ़कर बहुत खुशी हुई। आज के जमाने में वृद्ध बहुत लाचारी का जीवन जी रहे हैं क्योंकि उन्हें अपने बच्चों से प्यार-स्नेह नहीं मिल रहा है। सेवानिवृत्त होने के बाद वे पोते-पोतियों के साथ प्यार से दिन गुज़ारना चाहते हैं परन्तु उनके बेटे ही कहते हैं, पिताजी, आप बच्चों के साथ मौज-मस्ती मत कीजिए, बच्चे को पढ़ाई भी करनी है। आज के दौर में पढ़ाई का बहुत महत्त्व है।

ऐसे प्रेरणादायी लेख लिखकर लोगों के मन को जागृत करना है। मधुबन में कितनी दादियाँ हैं। भाई-बहनें उनको कितना सम्मान देते हैं। दादियाँ भी कितना प्यार बरसाती हैं। लेखक ने, आदिकाल की वृद्धावस्था किस प्रकार की थी, इसका बहुत सुंदर वर्णन किया है। वैदिक काल और मध्यकाल में कलायें कम होती गईं परन्तु वृद्ध का मान-सम्मान था। ऐसे लेख पढ़कर युवा पीढ़ी समझ ले कि हमें भी बुढ़ापा आयेगा। वृद्धों को भी बच्चों के सहयोगी बनना है। एक-दूसरे की सहायता लेकर जीवन-नैया को चलाना है। वृद्धों को अपना समय शिवबाबा की याद में बिताना है।

– ब्र.कु. सरस्वती क्यासा, बीदर

ज्ञानामृत का नाम कर्त्तव्यवाचक है, इसमें कोई शंका नहीं। मैं आत्मा ज्ञानामृत की आभारी हूँ। ज्ञानामृत के सितंबर, 2008 के अंक में ‘देवियों का उद्धारक स्वरूप’ लेख बहुत ही प्रभावी एवं मनोहारी लगा। वास्तव में देवी हिंसक कभी नहीं हो सकती है। देवियों के हाथों में हथियार उनकी उद्धारक शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति के प्रतीक हैं। सूक्ष्म शक्तियों के प्रतीक हैं शस्त्र। आठ शक्तियों के बारे में जानकर देवियों के प्रति तन-मन कृतज्ञ है।

– शम्भू दयाल सैनी, जयपुर

ज्ञानामृत पत्रिका हमें अंधकार से निकालकर सुख, शांति की ओर ले जाती है। इस पत्रिका को पढ़ने के पश्चात् मुझे सत्य के दर्शन हुए। भारत की यह अमूल्य पत्रिका है। ऐसी पत्रिकाएँ भारत की युवा पीढ़ी को नई दिशा देंगी। आज बाज़ार अश्लील साहित्य से भरा पड़ा है, ऐसे में ‘ज्ञानामृत’ युवा पीढ़ी को मोक्ष का मार्ग दिखाई देती है। सच्चा मार्ग, सही साधना, क्रोध पर नियंत्रण और जीवन जीने की कला हमें यह पत्रिका सिखाती है। मनुष्य कितने ही दु:खों से घिरा हो, ‘ज्ञानामृत’ उसे सही रास्ता बतला कर संकटों का हल कर सुख-शांति प्रदान करती है। मैंने इसे पढ़कर जीवन में बदलाव महसूस किया है। मुझे एक सच्चे गुरु, मार्गदर्शक की तलाश थी जो ‘ज्ञानामृत’ पत्रिका में मिला। कलियुग में इसका पठन अमृत रूप है, जो दु:खों के भवसागर से पार उतार सकेगा। नि:संदेह ‘ज्ञानामृत’ भारत की दार्शनिक पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ है।

– उमेश ठाकुर, पिपल्या बुजुर्ग, महेश्वर(म.प्र)

सितंबर, 2008 के अंक में ‘समय की पुकार – ब्रह्मचर्य’ और ‘सच्चा शृंगार’ लेख पढ़कर मन प्रसन्न हुआ। आध्यात्मिक ज्ञान ही सच्ची मुस्कान का स्थायी आधार है। संजय की कलम से ‘विनम्रता’ पढ़ते ही लगा कि विनम्रता से बढ़कर कोई आत्मशक्ति नहीं है। क्रोध रूपी अग्नि को विनम्रता रूपी शीतल जल परास्त कर देता है।

– रोशन लाल बजरंग, सोरिद नगर

सितंबर, 2008 के अंक में ‘आलस्य और अलबेलेपन से बचें’ लेख में जीवन को सुधारने के लिए कितने अच्छे वाक्य लिखे हैं। इनको धारण करने से सबका सुधार हो सकता है।

– ब्र.कु. शम्भू दयाल, अरैया (उ.प्र.)

कुएँ से निकल सागर की ओर

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

आंगन में टी.वी. के सामने भीड़ जमा थी। अहमदाबाद और बैंगलोर में हुए बम धमाकों के समाचार को लोग हल्की दहशत के साथ सुन रहे थे। मैं भी उस जमावड़े में शामिल हो गई। समाचारों का सार ग्रहण करने में मुश्किल से दो मिनट लगे और मैं टी.वी. की आवाज़ कम करने का नम्र निवेदन करके उठ खड़ी हुई। चार-पाँच कदम ही चली थी कि एक नौजवान के मोबाइल पर गूंजते गीत का स्वर कानों में पड़ा। पहला स्वर था नारी का – 'क्या हो अगर मैं तुमसे बिछुड़ जाऊँ।' दूसरा स्वर था पुरुष का – 'आग लगा दूँ सारी दुनिया को, मैं भी जलकर मर जाऊँ।' मुझे बम धमाकों में और इस गीत में एक गहरा सामंजस्य नज़र आया। आज का नौजवान, यदि उसे उसकी मनपसंद चीज़ ना मिले तो अपनी हताशा, निराशा, नफरत और बदले की आग को शांत करने का यही तो तरीका अपनाता है कि दुनिया को आग लगाई जाए और खुद भी उसमें जलकर मरा जाए। यह मानव बम क्या है? स्वयं को मारकर सबको मारने का उल्टा रास्ता। असंभव नहीं है कि बम फेंकने वाले किसी ने किसी से प्यार (प्यार नहीं काम-वासना का संबंध) जोड़ा हो और वह पूरा ना हुआ हो। इच्छा की अपूर्ति ने उसके अभिमान को जागृत कर दिया हो और प्यार शब्द की आड़ में वह कसाई से भी जघन्य पाप करने पर तुल बैठा हो।

अप-संस्कृति की मिलावट भी अपराध है

क्या इस विकृत मानसिकता के सुधार का कोई उपाय हमारे पास है? हम बमों को नष्ट कर रहे हैं, पुलिस जाँच को बढ़ा रहे हैं परंतु मन के भटकाव के लिए दोषी कारणों का निवारण कर रहे हैं क्या? क्या हमने उन स्वरों पर रोक लगाई जो जलने-जलाने की बातों को सुरीली तर्ज़ के साथ महिमामंडित करके नौजवानों के अपरिपक्व मन को भड़काते हैं? क्या उस लेखनी पर रोक लगाई जो मरने और मारने की बातों की तुकबन्दी करके कानों का आकर्षण पैदा करती है? यह तो मात्र गीत था, ऐसे दृश्य भी तो हैं जब व्यक्ति हज़ारों को मारता है और चौड़ी छाती करके सड़कों पर निर्भय चलता है? क्या हमने कभी सोचा कि हथियारों से भी भयंकर ये गीत और ये दृश्य हैं? आज कोई खाद्य पदार्थों में, मकान बनाने के सामान में, वस्त्रों या दवाइयों में मिलावट करता है तो उसका पर्दाफाश किया जाता है, उसे पकड़ा जाता है, सज़ा दी जाती है परंतु भारत के उच्च सांस्कृतिक मूल्यों में, यह जो विकारों और विकृतियों की, अप-संस्कृति की, अनैतिकता और भग्न मूल्यों की मिलावट हो रही है, क्या उसके लिए कोई धर-पकड़ या सज़ा का प्रावधान है?

भारत की संस्कृति में प्रेम एक बहुत उच्च मूल्य है। परमात्मा प्रेम का सागर है। इस प्रेम के बल से वह निर्बल को बलवान, अशक्त को सशक्त, अबला को सबला, गरीब को अमीर, विकारी को निर्विकारी, झूठे को सच्चा, पापी को पुण्यात्मा और पतित को पावन बनाता है।

सच्चे प्रेम में ईश्वरीय प्रेम की झलक

जैसे बूँद चाहे कहीं भी हो, उसमें सागर का रूप झलकता ही है, ऐसे ही प्रेम चाहे जहाँ भी हो उसमें प्रेम-सागर परमात्मा के ऊँचे प्रेम की झलक अवश्य मिलनी चाहिए क्योंकि स्रोत तो वही है। प्रेम किया था चाणक्य ने चंद्रगुप्त से, एक निर्धन बालक को बादशाह बना दिया। प्रेम किया था बुद्ध ने करुणा और दया से, लाखों निर्दोषों के बहते खून को रोक दिया, आँसुओं और आहों को मिटा दिया। **प्रेम किया था राजा विक्रमादित्य ने प्रजा से, न्याय का डंका बजा दिया, दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। प्रेम किया महावीर ने, मानव सहित सभी जीवों को जीने का अधिकार दिलवा दिया। प्रेम किया**

शंकराचार्य ने, आसक्तियों और मोह में फंसे लोगों को शान्ति का मार्ग दिखा दिया। प्रेम किया मीरा, रहीम, तुलसी ने, समाज को शाश्वत सत्यों का पैगाम दे दिया। प्रेम किया पन्ना धाय ने, राजा को दिए वचन को निभाकर, राजकुमार उदय को राजा बना दिया। प्रेम किया गुरुनानक और उनके उत्तराधिकारी गुरुओं ने, भयभीत जनता के हृदय में निर्भयता और साहस का कमल खिला दिया। प्रेम किया महात्मा गांधी ने, 35 करोड़ भारतीयों को स्वतंत्रता की छत्रछाया में ला दिया। प्रेम किया युवा विवेकानन्द ने, भारत के अध्यात्म का विश्व में परचम लहरा दिया। प्रेम किया झांसी की रानी ने, देश पर तन, मन, धन कुर्बान कर दिया। कितने प्रेमियों के नाम गिनती करें। इन सभी के प्रेम में, प्रेम के स्रोत परमात्मा के सच्चे प्रेम का अंश अवश्य झलकता है। ऐसा प्रेम आज भी हो सकता है। प्रेम के पात्र कोई स्त्री या केवल कोई पुरुष ही क्यों?

हम वैलेन्टाइन डे मनाते हैं, तो क्या हम ऐसा दिन नहीं मना सकते, जैसे कि 'दया का दरिया बहाने का दिन', 'आभार का भार उतारने का दिन', 'दुआ देने और लेने का दिन', 'माफ करने और दिल साफ करने का दिन', 'करुणा की कलियाँ खिलाने का दिन' आदि। ऊपर हमने जिन प्रेम-बाँकुरों की बात की, उनके जन्मदिन या शहादत दिन ऐसे हैं जो ऐसे रूपों में मनाए जा सकते हैं फिर केवल वैलेन्टाइन डे का ही इतना शोर क्यों? और उस महंगी गुलाब की डण्डी के बदले यदि दवाई के लिए तड़पते किसी बीमार की सहायता कर दें तो? पुस्तक और पैन के लिए परेशान किसी बालक का सहारा बन जाएं तो? भूख से बिलबिलाते किसी अर्धनग्न बच्चे की क्षुधा शान्त कर दें तो? टपकती झोंपड़ी में ठंड से ठिठुरते किसी को एक चद्दर उपलब्ध करा दें तो? तो क्या हम प्रेमी नहीं कहलाएंगे? क्या हमारा नाम सच्चे प्रेमियों की सूची में से काट दिया जाएगा?

प्रेम और काम – एक-दूसरे के विरोधी

जैसे छोटे-से गड्ढे में पड़े जल में अनेक प्रकार के कीटाणु पैदा हो जाते हैं, उसी प्रकार प्रेम जब किसी एक व्यक्ति या वस्तु से बंधकर ठहर जाता है, संपूर्ण मानव जाति तक अपनी पहुँच नहीं बना पाता है, सीमित दायरे तक सिमट जाता है, तो उसमें स्वार्थ, दिखावा, झूठ, ठगी, शोषण, वासना, मोह आदि अनेक विकारों रूपी कीड़े पैदा हो जाते हैं। झूठे प्रेम छलावों के आरंभिक दिनों में दोनों उल्लासोन्माद की भावनाओं के बुलबुले में तैरते हैं। दोनों ही एक-दूसरे की दृष्टि में पूर्ण होते हैं। एक-दूसरे के लिए बलिदान की भावना सहज बनी रहती है परन्तु कुछ समय बाद जब बुलबुला फटता है तो दोनों भूमि पर आ गिरते हैं। कड़वी सच्चाई पर पड़ा पर्दा हट जाता है। अब दोनों एक-दो को अपूर्ण नज़र आने लगते हैं। इस दौर में जो दरार पड़ती है वह फिर कभी भी भरने का नाम नहीं लेती।

निम्न स्तर के प्रेम में क्रोध, हिंसा, ईर्ष्या सब कुछ घटता रहता है। कुछ दिन पूर्व समाचार आया कि एक व्यक्ति ने अपनी महिला मित्र की हत्या कर दी। पुलिस ने छान-बीन की तो कारण मिला, महिला ने स्वयं के शोषण का प्रतिरोध किया था।

सच्चे प्रेम में काम-वासना सबसे बड़ी बाधा है। काम का अर्थ है 'दूसरों से लेना' और यह लेने की भावना कभी संतुष्ट नहीं होती। भौतिक प्रयासों द्वारा इस काम को संतुष्ट करने का प्रयत्न, अग्नि को पैट्रोल द्वारा बुझाने के समान है। अगले ही क्षण, अग्नि उस ईंधन को निगलकर अधिक तीव्रता से भड़क उठती है। फिर उस अग्नि को ईंधन देने के मार्ग में बाधा डालने वाले हर अच्छे इंसान को, समाज को अपना दुश्मन मान लिया जाता है। ऐसे दुर्गंध भरे प्रेम में दुश्मनी, घृणा, हताशा, निराशा जैसे कीड़े ही पैदा होंगे।

एक अन्य समाचार में था कि एक गरीब माता ने अपने ज़ेवर गिरवी रखकर इकलौते बच्चे का मैडिकल कॉलेज में दाखिला करवाया। वहाँ उसे एक लड़की से तथाकथित प्यार हो गया। लड़की के घरवालों को पता

पड़ा तो वे पढ़ाई छुड़ाकर उसे घर ले गए। इस नौजवान ने ज़हर की गोलियाँ खाकर आत्महत्या कर ली। कोई कह सकता है कि वह प्रेम पर कुर्बान हो गया परंतु माँ के प्रेम, माँ की कुर्बानी का क्या हुआ? उस अनजानी लड़की के लिए उसे मरना सहज लगा परंतु जिसने बाईस वर्ष तक अपना खून-पसीना पिलाकर, मुँह का निवाला खिलाकर इतना बड़ा किया उसके लिए जीना इतना मुश्किल हो गया था क्या? उसकी बाईस वर्ष की तपस्या का कोई मूल्य नहीं? यदि मरना ही था तो देश पर कुर्बान होता, किसी मरीज को रक्त, गुर्दे या किसी अंग का स्वेच्छा से दान देते हुए प्राण त्यागता, यदि पढ़ना मुश्किल लग रहा था तो गिरवी रखे ज़ेवर छुड़ाने के लिए कोई कड़ी मेहनत करता; ऐसे किसी सार्थक, समाजोपयोगी कर्म को किए बिना, केवल गोलियाँ खा लेने से, मृत्यु महिमामंडित नहीं हो जाती। यूँ तो प्रतिदिन हज़ारों कीड़े-मकोड़े पैदा होते और मरते हैं, इतना श्रेष्ठ मानव भी उन्हीं की तरह उपयोगिताविहीन जीवन का भार ढोए और कर्ज़ की गठरी सिर पर उठाए-उठाए दुनिया से कूच कर जाए तो मानव जाति के जन्म और उसकी दशा-दिशा पर उँगली उठने लगती है। **सच्चा प्रेम वह है जो जीना सिखाए, परिस्थितियों से जूझना सिखाए, धारा के विपरीत तैरना सिखाए, रिसते घावों को सहलाना सिखाए, बहते आँसुओं को थमना सिखाए। ऐसे प्रेम का झरना आज समाज को चाहिए। दुर्गन्ध भरे प्रेम-प्रसंगों से तो समाज के शरीर पर अनेक घाव हो गए हैं।** आज ज़रूरत है ईश्वरीय प्रेम की, बेहद के प्रेम की औषधि से उन घावों को पोंछने की। जब यह ईश्वरीय प्रेम फैलेगा तो कोई पुत्र माँ की तपस्या पर दाग नहीं लगायेगा। हर व्यक्ति, हर व्यक्ति से ईश्वरीय प्रेम की डोर में बंधा हुआ होकर भी कर्त्तव्यपालन के सुख से ओत-प्रोत होगा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ऐसे सच्चे, समाजोपयोगी, नि:स्वार्थ और स्थायी प्रेम का नि:शुल्क प्रशिक्षण केन्द्र है। झूठे प्रेम के चक्करों में पड़े हुए सभी मानवों का यह आह्वान करता है कि वे सड़ाँध भरे प्रेम-कूप के मेंढक बनने के बजाय, बेहद प्रेम के सागर परमात्मा से रिश्ता जोड़ें। ऊँचे से ऊँचे परमात्मा प्रदत्त ऊँचे प्रेम का रस चखें।

❖

बड़ा दिन

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क (दिल्ली)

आज मैं बड़ा दिन मनाने चली हूँ
कि खुद को खुदा से मिलाने चली हूँ
सुनो आत्मन्! जो न बात का, न आप का, होवे जो सिर्फ बाप का
न झूठ का, न पाप का, होता वही बड़े काम का
राज़ यही समझाने चली हूँ
कि खुद को खुदा से ....
भगवानुवाच: ऊँचे बड़े श्रेष्ठ विचार धरो, छोटा न कोई काम करो
बड़े दिन की शान यही है, बड़े बाप को याद करो
मिटा के हस्ती अपनी, उसकी हस्ती बताने चली हूँ
मिटा के बस्ती नर्क की, नया स्वर्ग बसाने चली हूँ
कि खुद को खुदा से ....
हों मेले, पर ठेलें नहीं, न हों कोई झमेले
हों सम्मेलन, परसंग नहीं, हो बाप संग मिलन रे
न भूलें बड़प्पन, न कभी रहें अकेले
मन शुद्ध संकल्पों से आबाद करें
बेगमपुर के बादशाह, चैतन्य विहँसते सितारे
हो चाहे कुछ भी, मध्य भ्रकुटि में विराज रहे
बना के परवाने, शमा पर स्वाहा कराने चली हूँ
आ चुका है शिव बाप, ज़माने को बताने चली हूँ
कि खुद को खुदा से ....

गतांक से आगे ...

असत्य से सत्य की ओर

• ब्रह्माकुमार सत्यवीर सिंह डागर, दिल्ली

(पिछले अंक में हमने पढ़ा कि जब शिव बाबा को पुकारने पर भी भ्राता सत्यवीर डागर की भूत से रक्षा नहीं हुई तो उन्हें शिव बाबा पर संशय आ गया और उन्होंने सेन्टर पर जाना कम कर दिया। पर थोड़े दिनों बाद एक बच्ची का अपहरण होने पर पुन: शिव बाबा से सहयोग मांगा तो उन्हें अपने अभियान में सफलता मिली जिस कारण शिव बाबा पर पुन: विश्वास जम गया ...... संपादक)

मेरा संशय दूर हुआ

अपहरण हुई बच्ची की बरामदगी से मेरा मन शिव बाबा के प्रति कृतज्ञता से भर आया। मैं शिव बाबा को फिर से याद भी करने लगा और मुरली भी सुनने लगा परन्तु मेरे मन से यह बात नहीं निकलती थी कि शिव बाबा ने मुझे भूत से क्यों नहीं बचाया। थोड़े दिन बाद, मैं अमृतवेले बाबा की याद में बैठा था। मुझे लगा जैसे कि बाबा मुस्करा रहे हैं। पहले तो कभी चित्र को देखकर ऐसा नहीं लगता था। मुझे बड़ा अच्छा लगा। फिर मुझे लगा जैसे कि बाबा बोल रहे हैं और मैं सुन रहा हूँ। सच में वहाँ कोई बोल नहीं रहा था। बस ऐसा लग रहा था परन्तु बिल्कुल स्पष्ट था। इस प्रकार का यह मेरा पहला अनुभव था। बाबा ने कहा, बच्चे, उस दिन जो भूत तुमसे आकर लड़ा था उससे तुम्हें न तो शिव बाबा ने बचाया था और न ही हनुमान जी ने। वह तो हनुमान जी का नाम सुनकर खुद ही भाग गया था क्योंकि हनुमान जी से सभी भूत-प्रेत डरते हैं। सभी मनुष्य आत्माएँ चाहे किसी भी धर्म की हों, हनुमान जी को जानती हैं। फिर वह तो हिन्दू धर्म की ही आत्मा थी। शिव बाबा तो गुप्त हैं। मुझे तो तुम बच्चों के अलावा और कोई जानता नहीं है। फिर वो प्रेत आत्मा कैसे जानती कि शिव बाबा कौन है? वहाँ न मैं आया था और ना ही हनुमान जी आये थे। मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया था। मेरा संशय उसी समय समाप्त हो गया। मैं निश्चयबुद्धि बन गया। नियमित रूप से मुरली पढ़ने लगा और बाबा को भी अच्छी रीति याद करने लगा।

इस बीच मेरा तबादला थाना बदरपुर का हो गया जहाँ मैं जैतपुर सेवाकेन्द्र के वरिष्ठ भाई ब्र.कु. विद्यासागर और सेवाकेन्द्र इंचार्ज बहन ब्र.कु. ऊषा बहन के संपर्क में आया और उनसे पालना ली।

जब मैं पहली बार मधुबन गया

मार्च 2001 में मुझे पहली बार मधुबन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अव्यक्त बापदादा से मिलन का अनुभव तो बहुत ही अच्छा रहा। मुझे लगा जैसे कि मैं अपने परिवार और माता-पिता के बीच में हूँ। बापदादा से मिलने के बाद जब मैं रात को सोया हुआ था तो स्वप्न में ब्रह्मा बाबा आये। मेरे सम्मुख उन्होंने अपनी दोनों बाँहें फैला रखी थीं। बाबा ने मुझे अपनी बाँहों में ले लिया। मुझे बहुत प्यार किया और फिर अपनी गोद में बिठा लिया। बाबा से असीम प्यार की अनुभूति पाकर मैं वापस लौटा। इसके बाद ज्ञान-मार्ग में, लौकिक परिवार के विघ्न भी आने शुरू हुए। प्यारे बाबा की टचिंग से मैंने 'भाग्य विधाता' पुस्तक तथा 'जीवन को पलटाने वाली एक अद्भुत जीवन कहानी' के दोनों भाग पढ़े। इनसे मुझे बहुत मार्गदर्शन और आत्म-बल प्राप्त हुआ। अब मेरी अवस्था ऐसी थी कि मुझे कोई भी बात में बाबा से कोई राय लेनी होती थी तो मैं अमृतवेले बाबा को कह देता था और मुझे कभी-कभी उसी समय और कभी-कभी बाद में बाबा की समझानी किसी न किसी प्रकार से मिल जाती थी। कभी बाबा सपने के द्वारा मुझे समझानी दे देते थे, कभी बाबा के बोल (बाबा जैसे अव्यक्त भाषा में बोलते हैं) मेरे कानों में सुनाई देते थे, कभी मौन की भाषा में सब कुछ समझा देते थे। मैं अब कहीं भी किसी

भी परिस्थिति में बाबा को अपनी बात कह सकता था। कभी-कभी बाबा भविष्य में आने वाली किसी परिस्थिति से सावधान भी कर देते थे। यह संवाद इतना स्पष्ट था कि इसमें किसी प्रकार का संदेह करने की कोई गुंजाइश नहीं थी।

मैंने अक्तूबर, 2006 में थाना प्रीत विहार का पदभार संभाला जो कि गंदे नाले के ऊपर बना है। उसके ऊपर सड़क बनाने का काम चल रहा था जो अभी आरंभिक अवस्था में था। नाले से बहुत बदबू आती थी। मच्छर भी बेहिसाब थे। थाने का पानी नमकीन था। मेरा विश्राम गृह तो इतना छोटा था कि सामान्य स्तर की किचन भी उससे बड़ी होती है। ये सब देखकर मैं बहुत परेशान हुआ, दिल बिल्कुल न लगा। मुझे विचार चला कि मैं तो बाबा के इतना समीप हूँ फिर बाबा ने मुझे ऐसी गंदी जगह पर क्यों लाकर बैठा दिया। यह तो मेरे लिए जैसे सज़ा हो गई। बाबा कोई अच्छी जगह भी दिलवा सकते थे। परन्तु मैं ये सब बाबा को कहने का साहस नहीं कर पाया। मैंने तीन दिन तक जैसे-तैसे सहन किया परन्तु मैं सामान्य नहीं हो पाया। आखिकार, मैंने चौथे दिन बाबा से अपने मन की बात कह ही दी। बाबा मुस्कराये और मेरे से पूछा, अच्छा बच्चे! बताओ संन्यासी कहाँ रहते हैं? मैंने कहा, बाबा संन्यासी तो जंगल में रहते हैं। बाबा ने फिर पूछा, क्यों रहते हैं? मैंने कहा, बाबा, तपस्या करने के लिए। तो फिर बाबा ने कहा, बच्चे, तुम भी तो संन्यासी हो। वो तो हद के संन्यासी हैं, तुम तो बेहद के संन्यासी हो फिर तुम्हें घर गृहस्थी के सुख क्यों याद आ रहे हैं? तुम यहाँ अकेले नहीं रहते हो, बाबा भी यहीं रहते हैं तुम्हारे साथ। तुम्हें यहाँ दिल्ली गवर्नमेंट ने नहीं भेजा, बाबा ने भेजा है सेवा अर्थ। यह तुम्हारी कर्मभूमि है। तुम्हारे द्वारा मुझे यहाँ लाखों आत्माओं की सेवा करानी है। सोचो, 84 जन्मों में तुम्हारे कितने माता-पिता, भाई-बहन और कितने संबंधी हुए होंगे। उन सबका तुम्हारे ऊपर कर्ज़ है जो तुम्हें यहाँ रहकर चुकता करना है। तुम तो यहाँ निमित्त मात्र हो, कार्य तो सारा बाबा को ही करना है। तुम्हारा काम है बाबा को बहुत प्यार से याद करना। किसी भी परिस्थिति में चेहरे की खुशी गुम न हो। यह समझानी सुनकर मैं एकदम हलका हो गया। आश्चर्य की बात यह है कि फिर जब भी नाले के पास से गुज़रा तो नाले से बदबू नहीं आ रही थी। मैंने अपने ड्राइवर और ऑपरेटर से भी पूछा जो जिप्सी में मेरे साथ थे तो उन्होंने कहा, साहब, बहुत बदबू है, सहन नहीं होती। मुझे उस दिन के बाद कभी भी उस नाले से बदबू नहीं आई।

मैं डेढ़ साल प्रीत विहार में एस.एच.ओ. रहा। यहाँ रहते हुए कृष्णानगर सेवाकेन्द्र इंचार्ज दादी कमलमणि और वरिष्ठ भ्राता ब्र.कु. जगरूप जी के संपर्क में आया। यहाँ पर पहले प्रदर्शनी के द्वारा, फिर अखबारों के द्वारा, पत्रिकाओं के द्वारा, बोर्ड व होर्डिंग के द्वारा, सिनेमा हॉलों के द्वारा व लोकल टी.वी. नेटवर्क के माध्यम से अनेकों सेवाएं हुईं।

लौकिक नौकरी की भी सारी ज़िम्मेवारी बाबा ने अपने ऊपर ली। मुझे कभी भी किसी भी बात में कोई दिक्कत नहीं आई। मैं कभी स्थूल सेवा में भी जाता तो बाबा पीछे से थाना संभालते। मैं पूरे ज़िले में एक सफल और कुशल एस.एच.ओ. समझा जाता था जबकि कार्य सारा बाबा करते थे। मैं सारे प्रीतविहार में बहुत लोकप्रिय हुआ। परिस्थितियाँ आती थीं और ऐसे समाप्त हो जाती थीं जैसे पानी पर लकीर।

बाबा ने मुझे मेरा रजिस्टर दिखाया

बाबा के इतने प्यार के अनुभव होने के बाद भी, थाने की नौकरी में न चाहते हुए भी कभी-कभी भूलें हो जाती थीं। कभी किसी पर हाथ उठ जाता था, कभी मुख से गाली भी निकल जाती थी, कभी कोई और अवज्ञा हो जाती थी। मेरी दृष्टि भी अभी तक पूरी साफ नहीं थी। कभी-कभी दृष्टि धोखा दे जाती थी। मैं चाहता तो था कि मुझसे कोई भी अवज्ञा न हो परन्तु फिर भी कभी-

कभार हो ही जाती थी जिससे मैं काफी परेशान हो जाता था। ऐसे ही एक दिन किसी अवज्ञा के होने पर मुझे बहुत ग्लानि हुई। मैंने रात को सब छोटी-मोटी भूलें बाबा को एक-एक करके सुनायीं। सुनाते-सुनाते मुझे रोना आ गया। मैंने अपने कमरे को अन्दर से बंद किया और जी भर कर रोया। मैंने कहा, बाबा, ऐसे ही भूलें करता रहूँगा तो संपूर्ण कैसे बनूँगा? मैंने उस दिन की मुरली में पढ़ा था कि बाबा को सच-सच बताने से उस बात का दंड आधा हो जाता है। मैंने इस जीवन में अज्ञानकाल से लेकर अब तक जो भी गलत काम किये थे, सब रात को बैठकर एक कागज़ पर लिखे और बाबा के सामने रख दिये और बाबा से कहा, बाबा, मैंने आपसे कुछ भी छिपाया नहीं है। सब कुछ साफ-साफ लिख भी दिया है और आपको बता भी दिया है। मैं आपके हवाले हूँ। मेरा मार्गदर्शन करो।

बाबा ने मुझे कहा, बच्चे, जो आज तुमने बाबा को बताया, वो आधा हुआ। और बचा हुआ आधा तुमने पश्चाताप के आँसुओं में आज बहा दिया लेकिन पूर्व जन्मों का अभी बहुत बकाया है। उसके लिए साँसों साँस बाबा को याद करो और आगे भी कोई विकर्म न हो। समय, संकल्प और बोल व्यर्थ न जायें। बाबा ने मुझे मेरा रजिस्टर दिखाया जो पूरा विकर्मों से भर चुका था। यहाँ तक कि रजिस्टर के आखिर में जो जिल्द थी, उस पर भी विकर्म लिखे हुए थे। शुरू का आधे से ज़्यादा रजिस्टर साफ हो गया था, शेष रहा हुआ था। उस रजिस्टर में छोटी से छोटी भूलें भी विकर्म के रूप में चढ़ी हुई थीं जिन्हें हम अक्सर दर किनार कर देते हैं। **यहाँ तक कि हमारी किसी के प्रति अशुभ भावना अथवा ईर्ष्या भी विकर्म के रूप में रजिस्टर में चढ़ जाती है।**

बाबा ने मुझे कहा, बच्चे, मारने-पीटने या गाली देने से आत्माओं को सुधरना होता तो फिर बाबा क्यों आता? इसलिए कभी भी न किसी पर हाथ उठाना है और न ही किसी को गाली देनी है। जहाँ डंडा चलाने की ज़रूरत हो, वहाँ दृष्टि से काम लो। बाबा की याद में किसी पर तीखी दृष्टि डालोगे तो वह गोली का काम करेगी। **बाबा ने कहा, बच्चे, यह ड्रामा एक्यूरेट बना हुआ है। यहाँ कोई किसी के साथ गलत नहीं करता। अभी अंतिम समय है। सब आत्माएँ अपना-अपना हिसाब ले-दे रही हैं। जिसके यहाँ चोरी हुई और जिसने चोरी की, दोनों ही अपने-अपने कर्मों में बंधे हुए हैं। किसी से घृणा मत करो, साक्षी होकर पार्ट बजाओ। चोर मारने-पीटने से तुम्हें कुछ नहीं बतायेगा। यदि बाबा की याद में उसे दो मिनट दृष्टि देकर उससे पितृवत् व्यवहार करोगे तो वह सब कुछ बता देगा। बाबा ने मुझे एक रजिस्टर बनाने की समझानी भी दी और कहा, बच्चे, रोज़ रात को सोने से पहले इस रजिस्टर में अपना दिन भर का पोतामेल पूरी ईमानदारी से लिखो। अविनाशी सर्जन से कुछ भी छिपाना नहीं। फिर सर्जन दवाई देंगे।**

उस दिन के बाद से मेरी दृष्टि, वृत्ति, कृति में बहुत बड़ा परिवर्तन आया। फिर मैंने किसी पर हाथ नहीं उठाया, किसी को गाली नहीं दी। हाँ, सख्त भाषा का प्रयोग कभी-कभी ज़रूरी होने पर करना पड़ता है परन्तु उपराम होकर। अब मैं रोज़ अपना पोतामेल (करीब एक साल से) रात को लिखता हूँ। अब मैं कह सकता हूँ कि मुझमें 80 से 90 प्रतिशत सुधार है। आगे प्रयास जारी है।

(क्रमशः)

इंद्र शब्द का अर्थ है इंद्रियजीत। ब्रह्मा जी का एक नाम इंद्र भी है क्योंकि ब्रह्मा जी इंद्रियजीत थे। उन्होंने अपनी सर्व इंद्रियाँ भगवान को दे दी थी। कर्मातीत बनने के लिए सबसे पहले अपनी सर्व कर्मेन्द्रियाँ भगवान को समर्पण करनी पड़ेंगी

अशान्ति का मूल कारण वैचारिक विकृति

• ब्रह्माकुमार के.एल.छाबड़ा, असिस्टेंट डायरेक्टर, सी.बी.आर.आई., रूड़की

आज पूरी दुनिया में जिस ओर देखो अशान्ति है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक राष्ट्रों में विभिन्न विवादों के कारण अशान्ति है और देशों के अन्दर विभिन्न वर्गों, समुदायों अथवा दलों के बीच अशान्ति है। अधिकांश परिवार कलह और अशान्ति की विश्वव्यापी समस्या से ग्रसित हैं। सांसारिक दृष्टि से किसी व्यक्ति के अशान्त होने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि परिवारजनों का मनोनुकूल व्यवहार न होना, इच्छानुकूल जीवन-यापन के साधन प्राप्त न होना, शारीरिक रोग आदि। आज साधन संपन्न व्यक्ति भी अपने को पूर्ण रूप से सुखी अनुभव नहीं करता। आखिर परेशानी कहाँ है? क्यों अशान्त होते हैं लोग? बाह्य कारण तो बहुत हैं परन्तु सबसे मुख्य कारण है आन्तरिक विकृति। हम अपनी अज्ञानता के कारण अपने लिए दु:खमय सृष्टि की रचना कर डालते हैं। जब तक भावनाओं में विकृति है तब तक संसार तो क्या भगवान भी शान्ति नहीं दे सकता। अल्पकाल के लिये यदि शान्ति मिल भी जाती है तो फिर अपनी वृत्ति (भावना) के कारण अशान्त हो जाते हैं।

सबका सोचने का तरीका अपना-अपना है। हम अपने विचार दूसरों पर लादना चाहते हैं, मनवाना चाहते हैं, ऐसा नहीं होता तो दु:खी-अशान्त हो जाते हैं। एक बार दु:खी माता-पिता अपने इकलौते पुत्र को लेकर ब्रह्माकुमारी आश्रम पर आए और दु:ख प्रकट करने लगे कि हमारी एकमात्र संतान यह बेटा है परन्तु लगभग एक महीने से इसने खाना छोड़ रखा है, गुमसुम रहता है, कहीं आता-जाता नहीं, घर में निढाल पड़ा रहता है, अनेक डॉक्टरों को दिखाया परन्तु बीमारी भी नहीं निकली। हम बहुत परेशान हैं, बहन जी क्या करें? बहन ने उनके बेटे से कुछ पूछना चाहा परन्तु वह कुछ नहीं बोला। तब बहन ने उनसे कहा कि कल अपने बेटे को मेरे पास भेजना परन्तु खुद साथ में नहीं आना, मैं अलग से इससे बात करके देखूंगी। अगले दिन वह आया तो अपने दिल का हाल बताने लगा कि बहन जी, मैं अपने माता-पिता को दु:खी नहीं कर रहा बल्कि वे ही मुझे दु:खी बनाये हुए हैं। पिता चाहते हैं कि मैं उनका व्यापार संभालूं और हर दम उनकी नज़रों के सामने रहूँ परन्तु व्यापार में मेरी तनिक भी रुचि नहीं है। मैं पायलेट बनना चाहता हूँ पर वे डरते हैं कि कहीं ऐरोप्लेन खराब हो गया तो आसमान से गिर कर मर जायेगा। मैंने बहुत समझाया पर वे नहीं मानते हैं इसलिए मैंने खाना-पीना, बोलना छोड़ दिया है, अब आसमान से गिर कर तो नहीं, मैं धरती पर रहते हुए इन्हें मरकर दिखाना चाहता हूँ। बहन ने उससे कहा कि मैं आपके माता-पिता से बात करके देखूंगी, कल अपने माता-पिता को भेजना परन्तु खुद नहीं आना। अगले दिन माता-पिता आये तो बहन ने उन्हें समझाया कि क्यों अपने बेटे के मोह में इतना फँसे हुए हो जो उसको मौत के डर से पायलेट नहीं बनने देना चाहते। वह आसमान से गिरकर तो चाहे ना मरे परन्तु यदि ऐसे ही रहा तो कुछ दिन में यूँ ही मर सकता है तो बताओ उसे बिना पायलेट बने यूँ ही मारना चाहते हो क्या? क्यों मोहवश उसके अरमानों का गला घोंट रहे हो। आपने समझा कर, कह कर देख लिया, जब वह नहीं मान रहा है तो क्यों नहीं उसे अपने रास्ते पर जाने देते? आप और हम जो हवाई जहाज में नहीं उड़ते, क्या अमर रहेंगे? बात माता-पिता की समझ में आ गई और उन्होंने बेटे के पायलेट बनने पर आपत्ति छोड़ दी। कुछ वर्षों बाद वह युवक सफल पायलेट बन गया।

हमें जान लेना चाहिए कि हर आत्मा का स्वभाव-संस्कार अपना-अपना है। दूसरों को अपने हिसाब से

चलाने के बारे में न सोचकर स्वयं के बारे में सोचिये कि क्या हम स्वयं अन्य किसी के कहे अनुसार पूरी तरह से, खुशी से चल सकते हैं। क्रोध करने से अशान्ति पैदा होती है यह सब जानते हैं फिर भी क्रोध करते हैं। यदि हमसे कोई कहे कि क्रोध करना छोड़ दो तो क्या छोड़ देंगे? अधिकतर का जवाब यही होगा कि छोड़ना तो चाहते हैं परन्तु छोड़ नहीं पाते हैं। क्रोध आने पर अगर कोई पाँच मिनट के लिये भी स्वयं पर कन्ट्रोल कर ले तो बहुत सारी गलतियों से बच जायेगा। रात-भर बहुतों को नींद नहीं आती, क्यों नींद नहीं आती? इसका मुख्य कारण यह है कि फालतू सोच चलती रहती है, नींद भाग जाती है। चाहे संसार की बड़ी से बड़ी डिग्रियाँ प्राप्त कर लें परन्तु मन को शान्ति की ट्रेनिंग डिग्रियों से नहीं मिलती। वह आत्मबोध से प्राप्त होती है। हम चाहते कुछ हैं और मिलता कुछ और है तो व्यथित हो जाते हैं। हमें जो मिल रहा है, हम उसी के पात्र हैं यदि ऐसा सोचें तो कभी अशान्ति नहीं होगी। जो कुछ भी मिल रहा है, मेरे ही कर्मों का फल है। हमारी मानसिक सोच ठीक हो जायेगी तो परेशानी भी दूर हो जायेगी। इस सोच के परिवर्तन के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने एक साधना दी है, राजयोग। राजयोग एक ऐसी पद्धति है जिससे मनुष्य की सोच ठीक हो जाती है। पर राजयोग कोई जादू की छड़ी नहीं जो सोच तुरन्त ठीक हो जाये। हाँ, इतना ज़रूर है कि 50 सालों की गलत सोच को ठीक होने में 50 दिन लग ही जायें। शनै:शनै: परिवर्तन होता जाता है। **राजयोग के द्वारा जब मन परमपिता परमात्मा से जुड़ जाता है तो ईश्वरीय शक्तियों का प्रादुर्भाव हो जाता है जिनसे हमारी विकृतियाँ बहुत सहज रीति से खत्म हो जाती हैं। फिर हम दूसरों से परेशान-अशान्त होने से छूट जाते हैं। विकारी संसार का प्रभाव फिर नहीं आता। राजयोग कोई भी छोटा-बड़ा, पढ़ा-अनपढ़ा, किसी भी धर्म-संप्रदाय से संबंधित व्यक्ति सीख सकता है। संसार में कर्म करते हुए भी संसार की बुराइयों से मुक्त हो सकता है क्योंकि राजयोग के माध्यम से महान विचार मिल जाते हैं। नकारात्मक सोच का स्थान सकारात्मक चिन्तन ले लेता है जिससे आत्मबल में वृद्धि होती है।**

❖

मेरे प्यारे बाबा

ब्रह्माकुमार हँस, पश्चिम विहार, दिल्ली

किन शब्दों में तेरे कर्म का इज़हार मैं करूँ
तेरी नेमतों का कैसे शुमार मैं करूँ
तेरे सिवा कुछ भी मुझे अच्छा नहीं लगे
तुझको ही दिलो-जान से प्यार मैं करूँ
जो कुछ भी मेरे पास है तेरी ही देन है
तेरा ही धन्यवाद बार-बार मैं करूँ
मिले हैं सारे सुख इस जीवन में मेरे बाबा!
फिर नवयुग का क्या इंतजार मैं करूँ
उठती हैं मौज में, दिल से तरंगें बाबा
चारों तरफ जो तेरा दीदार मैं करूँ
आँखों से जो प्यार के आँसू टपक पड़े
मोती बना कर उनको, शृंगार मैं करूँ
हँस कर दिया है सौंप, हँस को तुझे बाबा
क्या बाकी रहा जो तुझ पे बलिहार मैं करूँ

सच्ची मानवता

• ब्रह्माकुमार वैद्यनाथ, ओ.आर.सी.

अपनी दीन-हीन स्थिति में वह बहुत ही दु:खी और परेशान लग रहा था। एक टांग टूटी हुई थी। मैले-फटे वस्त्र उसके अर्धनग्न तन का प्रदर्शन करा रहे थे। लंगड़ाते हुए वह बस में चढ़ ही गया और रूलाई भरी आवाज़ में कहने लगा, भगवान की दया होगी, कुछ रुपया दे दो, दुर्घटना में टांग टूट गई, हॉस्पिटल में दाखिल था, पैसा न होने के कारण पूरा इलाज न हो सका, बड़े एहसान होंगे यदि इस गरीब की कोई मदद करे। उसकी करुणा भरी आवाज़ सुनकर कई पिघल गए। मेरे समीप बैठे एक मानवता प्रेमी महानुभाव ने बीस रुपये का नोट निकाला और उसके हाथ में थमा दिया। दया मुझे भी आई, साथ-साथ शिव भगवान की आज्ञा भी याद आई कि सच्चा ज्ञान-धन दान देकर ही हर मानव को सच्चे सुख की राह बतानी है। मैंने बैग में से प्रसाद का डिब्बा निकाला परन्तु उसे तो केवल रुपयों की आश थी। उसके चेहरे पर उभरी इन्कार की लकीरों से मैं समझ गया कि यह केवल रुपयों का ही दीवाना है। प्रसाद का तिरस्कार न हो इसलिए मैंने अपना हाथ पीछे कर लिया। मेरे पैरों तले की जमीन तो तब खिसकी जब मैंने बस से उतरने के बाद उस व्यक्ति को बार में जाकर बीयर पीते देखा। मेरा विचार चला कि जिसने इसको पैसे दिये, क्या गलती उसकी है? यदि वह पैसा ही न देता तो वह शराब कैसे पीता? फिर उस महानुभाव को मानवता प्रेमी कहा जाये या दानवता प्रेमी? नहीं, नहीं, वह तो मानवता प्रेमी ही था। उसने तो इसके भले के लिए ही रुपये दिये थे परन्तु इसी ने उन्हें गलत कार्य में लगा दिया। मन में विचारों का सागर उमड़ पड़ा कि यदि हम शुभ भावना से अथवा मानवता प्रेम से पैसे या वस्तु का दान करें और लेने वाला उन्हें गलत कार्य में लगा दे तो क्या वह मानवता है? विवेक इसका उत्तर नहीं में देता है। यदि नहीं तो फिर किसे कहेंगे मानवता?

किसे कहेंगे मानवता

मानवता अर्थात् अपने आंतरिक सद्‌गुणों का विकास कर हर मानव के साथ सद्‌व्यवहार करना और दूसरों के आंतरिक सुषुप्त सद्‌गुणों को भी सुजाग करना। भूखों को रोटी खिलाना या प्यासे को पानी पिलाना, आज हम मानवता को केवल यहाँ तक सीमित समझते हैं और शायद यही कारण है कि दिनों-दिन समाज में भूखे व प्यासों की संख्या बढ़ती जा रही है। हमारा कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि भूखे को रोटी न खिलाई जाये या प्यासे को पानी न पिलाया जाये। यदि हमारे पास है तो अवश्य खिलायें, पिलायें। भारतीय संस्कृति तो हमें यहाँ तक भी शिक्षा देती है कि अपने पास यदि एक ही रोटी है तो उसमें से भी आधी किसी भूखे को देकर उसकी दुआ का पात्र बनना चाहिए। परन्तु आज समाज की स्थिति कुछ-कुछ विचित्र-सी बनती जा रही है। **इसलिए मानवता प्रेमियों को यह ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि भूखे को अन्न का दान और दीन-हीन को धन का दान देने के साथ-साथ उन्हें सच्चे ज्ञान-धन का भी दान देना आवश्यक है ताकि वह प्राप्त हुए भौतिक दान का सदुपयोग कर सके, उसे गलत कार्य में न लगाये। इसी के साथ उस दीन-हीन में कर्त्तव्यपरायणता, कर्मठता, स्वनिर्भरता, स्वाभिमान एवं आत्मविश्वास आदि गुणों का बीजारोपण करना आवश्यक है अन्यथा परिणाम यह होगा कि हम तो अपनी मानवता की फर्ज़अदाई अर्थ दान देते रहेंगे और उसकी लेने की आदत पक्की होती जायेगी। वह कर्मों की गहन गति से वंचित ही रह जायेगा और उसमें आलस्य, निरुत्साह एवं निकम्मेपन के संस्कार पनपते जायेंगे।** अत: हमें

ध्यान रखना है कि हमारे क्षणिक मानवता के प्रदर्शन में कहीं किसी का सदा के लिए अकल्याण न हो जाए। मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि मानव के अन्दर सही अर्थों में मानवता स्थापित करने में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सहज राजयोग एवं ईश्वरीय ज्ञान की जो शिक्षा दी जा रही है वह अति लाभदायक एवं सहज है। राजयोग के अभ्यास से व्यक्ति सहज ही अपने स्वरूप को तथा सर्वशक्तिवान पिता परमात्मा के भी स्वरूप को जानकर उनसे बुद्धि का नाता जोड़ना सीख जाता है। इससे उसमें प्रेम, भाईचारा, सदाचार, स्व-निर्भरता आदि गुणों का विकास सहज ही हो जाता है। व्यक्ति सर्वशक्तिवान परमात्मा को अपना साथी बनाकर स्व-निर्भर अथवा स्वावलंबी बन जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि जो भी मानवता प्रेमी हैं, समाज सेवी संगठन हैं, मूक-बधिर, विकलांगों प्रति सेवा संस्थान हैं वे अपनी सेवाओं के साथ राजयोग की शिक्षा एवं सहज ज्ञान के विषय को जोड़ दें जिससे कि मानव अपने आंतरिक सद्‌गुणों का विकास कर मानवता से भरपूर हो। एक-एक मानव के महान बनने से ही इस भारत को पुन: सोने की चिड़िया बना सकेंगे।

❖

विषयासक्ति महान विघ्न

दिलीप देवनानी, आगरा

आत्मज्ञान के मार्ग में विषयासक्ति एक महान विघ्न है। उड़िया बाबा जी कहते थे, आत्मा में रमण करने वाला इंद्रियों से कैसे खेल सकता है? इंद्रियों से खेलने में महान दु:ख है जिसकी कभी समाप्ति नहीं हो सकती। विवेकचूड़ामणि में तो आद्य गुरु शंकराचार्य ने बार-बार विषय-निंदा की है और विषयों को विष से भी अधिक भयानक बताया है। विष तो खाने वाले को मारता है लेकिन विषय तो देखने वाले को भी नहीं छोड़ते। रामचरितमानस में आता है –

सुनहिं उमा ते लोग अभागी।
हरि तजि होहिं विषयी अनुरागी।।

संत कबीर कहते हैं –

चलन-चलन सब कोई कहें बिरला पहुँचे कोय।
एक कनक अरु कामिनी घाटी दुर्लभ दोय।।

रामकृष्ण परमहंस कहते थे, पति-पत्नी को संयम से रहना चाहिए और ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उन्हें शक्ति दे ताकि वे संयम से रह सकें। स्वामी अखण्डानन्द जी का मत था कि एक पुत्र हो जाने पर, इस शक्तिक्षयकारिणी क्रिया का त्याग कर देना चाहिए।

गीता में तो भगवान ने काम को ज्ञानी का नित्य वैरी बताया है और आज्ञा दी है कि हे अर्जुन! इस ज्ञान-विज्ञान का नाश करने वाले पापी काम को अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल।

इस प्रकार, शास्त्रों व संत-महात्माओं ने विषयासक्ति को परमार्थ के पथ में महान विघ्न बताया है। जब तक साधक इस पर विजय नहीं पा लेता तब तक सुख-शान्ति की बात बहुत दूर है चाहे वह वेदान्त का ज्ञाता क्यों न हो।

इस पर विजय पाने का उपाय है, विषयों का दोष-चिन्तन, निरन्तर भगवत्स्मरण करने का स्वभाव तथा स्वरूप का विचार कि मैं अनासक्त आत्मा हूँ। आत्म-स्वरूप का बोध, काम विकार की जड़ को ही उखाड़ देता है। ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग – विषय विकार को जीतने के लिये महान अस्त्र हैं। प्रारंभ के साधकों के लिये भगवान की स्मृति और नियमों के पालन में निष्ठा आदि उपाय सहायक हैं। भगवान की कृपा होने पर मार्ग सहज हो जाता है और कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं।

मुरली

• ब्रह्माकुमार रामलोचन, शान्तिवन (आबू रोड)

भक्तिमार्ग के शास्त्रों में वर्णन आता है कि जब श्री कृष्ण मुरली बजाते थे, गोप-गोपियाँ मुरली की तान सुनने के लिए सभी काम-काज छोड़कर दौड़े आते थे, उन्हें देह की सुध-बुध भी नहीं रहती थी। मुरली की तान सुनकर वे सभी गम भूल जाते थे, दु:ख-दर्द खत्म हो जाता था। तो प्रश्न उठता है कि वो मुरली कौन-सी मुरली थी? क्या काठ की मुरली थी? काठ की मुरली तो आज भी बहुत-से लोग अच्छी तरह से बजाते हैं लेकिन उस से इतनी प्राप्ति तो नहीं होती जितना कि शास्त्रों में गायन है। इससे सिद्ध है कि इस गायन योग्य मुरली का और इसको बजाने वाले का अलौकिक ही कोई रहस्य है। इस रहस्य को सुलझाते हुए, वर्तमान समय परमात्मा ने धरती पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के श्रीमुख से यह जवाब दिया है कि वो मुरली है, ज्ञान की मधुर मुरली। ज्ञान अर्थात् समझ, सभी प्रकार की समझ। जब इंसान को सभी प्रकार की – समय की, स्वयं की, परमात्मा की, भाग्य बनाने की, पाप नाश करने की, सृष्टि के आदि-मध्य-अंत की, कर्म-अकर्म-विकर्म की समझ मिल जाती है तो उसका कर्म श्रेष्ठ और जीवन परिवर्तन होने लगता है। परमात्मा की याद उसके सभी पापों का नाश कर देती है। उसका जीवन सुखी, श्रेष्ठ, खुशहाल तथा अतीन्द्रिय सुख वाला बन जाता है। तो आइये, मुरली के शब्दों द्वारा मुरली के अलौकिक अर्थ को समझें। मुरली पाँच शब्दों – म, उ, र, ल, इ से मिलकर बनी है।

'म' अर्थात् मधुरता

मुरली द्वारा सबसे पहले हमारे जीवन में मधुरता आती है अर्थात् हम सबको प्रिय लगने लगते हैं। इसका कारण यह है कि हमारे जीवन से वे समस्त बुराइयाँ निकलनी शुरू हो जाती हैं जिन ने हमको कड़वा बना दिया था। बुराइयाँ अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, घृणा आदि। देवी-देवताओं में ये बुराइयाँ नहीं हैं तो वे सबको कितने मीठे लगते हैं। एक छोटे बच्चे में भी कोई बुराई नहीं होती तो वह सबको प्यारा लगता है। मुरली सुनने से समझ मिलती है कि मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं। मैं आत्मा जब परमधाम में भगवान के पास थी तो मेरे में कोई विकार नहीं थे, मैं एकदम पवित्र थी। फिर जब शरीर धारण किया, देव आत्मा बनी तब भी मैं निर्विकारी थी। ये विकार तो बाद में प्रवेश हुए हैं। यह समझ विकारों की कड़वाहट को निकाल जीवन को मधुर बना देती है।

'उ' अर्थात् उपरामता

मुरली के द्वारा हमें ज्ञान मिलता है कि समय अति समीप है, सभी को वापस घर जाना है, महाविनाश होने वाला है तो आत्मा उपराम बन जाती है। एक है न्यारा बनना, दूसरा है उपराम रहना। न्यारा कमल का फूल है, उपराम गुलाब का फूल है। दोनों फूलों में अन्तर क्या है? कमल का फूल न्यारा है, उसमें खुशबू नहीं होती है जबकि गुलाब का फूल उपराम है उसमें खुशबू होती है। **जैसे हलवा बनाते हैं तो जब पककर तैयार हो जाता है तो खुशबू देने लगता है तथा बर्तन से अलग हो जाता है। ठीक इसी प्रकार गुलाब का फूल जब पूरा खिल जाता है तो ज़रा-सा घुमाने से ही फूल की पंखुड़ियाँ गिर जाती हैं, सिर्फ बीच में बौर ही बचता है। बौर अर्थात् आत्मा। देह, देह के सम्बन्ध तथा पुराने संस्कार से ज़रा-सा भी लगाव नहीं रहे तब आत्मा एकदम उपराम हो जाती है।**

'र' अर्थात् रचयिता और रचना का ज्ञान

पहले के ऋषि-मुनियों ने परमात्मा के संबंध में नेति-नेति कहा परन्तु मुरली के द्वारा हम इति को अर्थात् सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को जान जाते हैं जिससे त्रिकालदर्शी बन जाते हैं। तीनों लोकों की नॉलेज को जानने के कारण त्रिलोकीनाथ भी बन जाते हैं। परमात्मा का यथार्थ परिचय जानने के कारण आस्तिक और भगवान से संबंध जुड़ने के कारण भगवान के वर्से के अधिकारी बन जाते हैं। राजयोग के अभ्यास से

विकर्माजीत तथा मुक्ति-जीवन्मुक्ति के अधिकारी बन जाते हैं।

'ल' अर्थात् लक्ष्य

मुरली के द्वारा हमको लक्ष्य मिलता है। जब स्वयं परमात्मा ज्ञान दे रहा है अर्थात् ज्ञान की मुरली बजा रहा है तो लक्ष्य भी ऊँचा ही होगा। संगमयुग का लक्ष्य मिला फ़रिश्ता बनना और भविष्य का लक्ष्य विष्णु चतुर्भुज बनना। इस लक्ष्य के कारण न्यारे तथा विष्णु के समान अलंकारधारी बन जाते हैं।

'ई' अर्थात् ईश्वरीय आनन्द

मुरली के द्वारा आनन्द की प्राप्ति होती है। गायन है कि अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपीवल्लभ के गोप-गोपिकाओं से पूछो। वह आनन्द हमें इस समय भगवान के द्वारा प्राप्त हो रहा है क्योंकि सच्चे-सच्चे गोप-गोपी तो हम ही हैं जिन्होंने भगवान को पहचान लिया, भगवान को अपना सर्वस्व मान लिया। गोप-गोपी का अर्थ ही है आत्मिक-स्वरूप में स्थित रहने वाला। जब देहभान से मुक्त होंगे तभी तो अतीन्द्रिय सुख मिलेगा क्योंकि अतीन्द्रिय सुख का अर्थ ही है इन्द्रियों से परे का सुख अर्थात् आत्मिक सुख। इस जीवन की सर्व प्राप्तियाँ तथा शरीर छोड़ने के बाद भी जीवन्मुक्ति की प्राप्ति इस मुरली के द्वारा ही होती है जो इस समय हम भगवान द्वारा प्रतिदिन सुनते हैं।

❖

ईमानदारी का मीठा फल

ब्रह्माकुमार मुकेश, बीकानेर

एक प्रचलित कहानी है कि एक राजा ने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव के लिए राज्य के नौजवानों को एक-एक बीज दिया और कहा, इसे गमले में लगाकर सींचना और एक वर्ष बाद मेरे पास लेकर आना। जिसका पौधा सबसे अच्छा होगा उसे राजा बनाया जाएगा। बीज लेकर सब खुशी-खुशी घर लौटे। पाँच-छह दिन गुज़र जाने पर भी जब बीज अंकुरित नहीं हुआ तो सबने उसी प्रकार का बीज नर्सरी से खरीदकर अपने-अपने गमले में लगा दिया और जी-जान लगाकर, खाद-पानी से उसकी संभाल करने लगे। केवल बैजू नाम का नौजवान ही ऐसा था जो अपने खाली गमले को देख चिन्तित तो था पर उसने बाज़ार से दूसरा बीज खरीदने का दुस्साहस नहीं किया। निश्चित समय पर सभी ने बड़े-बड़े पौधों वाले गमले राजा के सम्मुख पेश किए, केवल बैजू ही एक कोने में डरा-सहमा खड़ा था अपने खाली गमले के साथ। राजा ने उसे अपने पास बुलाया और घोषणा की कि बैजू ही मेरा उत्तराधिकारी है। जब जनता ने उसके खाली गमले को प्रश्नवाचक नज़रों से देखा तो राजा ने भेद खोला कि मैंने उबले हुए बीज सभी को दिए थे। बैजू पूरा साल उसी उबले बीज को ईमानदारी से सींचता रहा जबकि शेष सभी ने राजाई पाने के लोभ में बीज बदल लिए। ये बड़े-बड़े पौधे इनकी बेईमानी की कहानी कह रहे हैं। बैजू ही एकमात्र ऐसा ईमानदार लड़का है जिसने बीज नहीं बदला और उसी को पूरे वर्ष ईमानदारी से अंकुरित करने का प्रयास करता रहा। बीज तो अंकुरित होना ही नहीं था लेकिन बैजू हिम्मत व ईमानदारी से अपना खाली गमला ही मेरे पास लेकर आया। राजा ने घोषणा की कि हर राज्य की जनता यह उम्मीद करती है कि उसका राजा हिम्मतवाला व ईमानदार हो और बैजू ने अपनी इसी हिम्मत व ईमानदारी का परिचय दिया है, इसलिए इस राज्य का अगला राजा बैजू ही होगा।

इस कहानी की यही शिक्षा है कि बुद्धि रूपी ज़मीन में ईमानदारी का बीजारोपण कर उसे सींचने पर विश्वास रूपी मीठे फल निकलेंगे। **अच्छाई का बीज सींचने पर अच्छे मित्रों की प्राप्ति होगी तथा नम्रता का बीज डालने पर महानता रूपी फल निकलेगा। यदि बेईमानी का बीज डाला तो अविश्वास के कांटे निकलेंगे। स्वार्थ का बीज डाला तो अकेलेपन का अनुभव होगा। पाप का बीज डाला तो अपराधबोध की झाड़ियाँ उगेंगी। लालच करेंगे तो स्वयं का ही नुकसान होगा। इसलिए क्या बीज लगाना है, इसकी सावधानी रखनी है। आज लगाए गए बीज के आधार पर भविष्य की फसल मिलेगी। आज श्रेष्ठ कर्मों के बीज डालेंगे तो भविष्य में अच्छे मीठे फल खाएंगे और बुरे कर्मों के बीज डालने पर भविष्य में उनकी कीमत भी हमें ही चुकानी होगी।**

शरीर आत्मा का वाहन है

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

मनुष्य आत्मा निराकारी लोक से साकारी लोक में आकर पाँच तत्वों से बनी देह में क्रियाशील हो जाती है और जीवन भर संकल्प व कर्म करती रहती है। उसका शरीर एक गाड़ी या कार की तरह उपयोग में लाया जाता है।

मस्तिष्क की क्षमता का आधार है आत्मा

इस्पात से बनी विभिन्न गाड़ियाँ अलग-अलग कम्पनियों या देशों में अलग-अलग नाम से बनायी जाती हैं। उनके आकार, रूप, क्षमता व मूल्य आदि में समानता नहीं होती। गर्भ में विकसित होने वाले शिशु भी आकार, रंग आदि के हिसाब से अलग-अलग प्रकार के हो सकते हैं। गाड़ियों में इंजन पीछे भी लगे होते हैं परन्तु मनुष्य का मस्तिष्क रूपी इंजन सिर में बिल्कुल सटीक स्थान पर विकसित होता है। जिस प्रकार कार का इन्जन एक विशेष संरचना का लौह पिण्ड ही है, जो बैटरी से करंट पाकर, पैट्रोल का उपयोग, ऊर्जा पैदा करने के लिए करता है, उसी प्रकार, मस्तिष्क रूपी कोशिकाओं का पिण्ड, भ्रकुटि में विराजमान आत्मा रूपी बैटरी से विचार तरंगें पाकर आँख, कान, मुख आदि विभिन्न कर्मेन्द्रियों में गति पैदा करता है।

शरीर का रख-रखाव आत्मा पर निर्भर

कार की चाल व रख-रखाव जैसे ड्राइवर की निपुणता पर निर्भर करता है, वैसे ही शरीर रूपी कार की चाल व रख-रखाव आत्मा रूपी ड्राइवर की आदतों पर निर्भर करता है। जिस प्रकार कार में समय-समय पर, खराब पुर्ज़े हटाकर नए लगाये जाते हैं, उसी प्रकार शरीर में भी घिस चुके दांत, खराब आँख, कमज़ोर कान आदि को नकली उपकरणों से काम लायक बनाया जाता है। शरीर की अरबों-खरबों कोशिकाओं में नित्य विकृति व टूट-फूट (Degeneration) होती रहती है और इनका स्थान नई-नई कोशिकाओं द्वारा लिया जाता है। प्रत्येक सात साल में मनुष्य का लगभग पूरा शरीर ही नई कोशिकाओं के द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है

आज सी.एन.जी. वाहनों का उपयोग होने लगा है और बैटरी से चलने वाले 'शून्य प्रदूषण वाहन' विकसित किये जा रहे हैं परन्तु डिस्चार्ज हो चुकी आत्मा रूपी बैटरी को पुन: चार्ज करने की विधि का ज्ञान मनुष्यों को है नहीं। यही कारण है कि शरीर रूपी वाहन 'सेल्फ स्टार्ट' न होकर सामाजिक मान्यताओं व परम्पराओं के धक्के से चल रहा है। बुद्धि व विवेक ही 'सेल्फ स्टार्ट' की चाबी है। आत्मा ही सेल्फ (Self) है और परमात्मा शिव ही इस आत्मा रूपी बैटरी के सुपर चार्जर हैं। वे (शिव) बैटरी को मात्र चार्ज ही नहीं करते बल्कि इसमें लगी सात प्लेटों (ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द व शक्ति) को भी जंग से छुड़ा कर चमका देते हैं।

'बीमार कम्पनी' से सावधान रहें

धातु से निर्मित गाड़ी की बोझ उठाने की एक क्षमता होती है परन्तु देह रूपी गाड़ी का ड्राइवर (आत्मा) व्यर्थ बातों व घटनाओं का असीमित बोझ उठा लेता है, जिसका पूरा दबाव फिर शरीर पर आता है। जैसे ऊपर तक लदी गाड़ी धीमी गति से चलती है, वैसे ही व्यर्थ चिन्तन से लदा मनुष्य भी धीमी गति से कर्म कर पाता है। मोटर गाड़ी पलट जाये तो गाड़ी व माल दोनों खराब हो जाते हैं परन्तु देह रूपी गाड़ी पलट जाये तो देह जख्मी हो जाती है किन्तु व्यर्थ बातों की स्मृति वाला माल फिर भी ठीक रहता है। कोई कुसंस्कारी मनुष्य देह से चाहे कितना भी जख्मी, बीमार हो परन्तु वह अपनी स्मृति में भरी व्यर्थ बातों के बोझ को फिर भी संभाले संजोये रहता है। समाज में जान व माल का बीमा करने वाली कई बीमा कंपनियाँ हैं

परन्तु मन-बुद्धि में भरे संकल्पों के माल का बीमा करने वाली कोई भी बीमा कम्पनी नहीं है। हाँ, संकल्प घटिया से घटिया होते चले जायें, इसके लिए 'बीमार कम्पनी' अर्थात् घटिया संगी-साथियों की कोई कमी नहीं है। ऐसी 'नि:शुल्क बीमार कम्पनी (Premium free Insurance Company)' से बचकर रहना ही हितकर है। विभिन्न धर्म रूपी गैराज आज खटारा गाड़ियों से भरे हुए हैं जिनकी कितनी भी सर्विसिंग क्यों ना की जाये, वे अधर्म मार्ग पर ही हिचकोले खाती हैं। बाज़ार की ऐसी स्थितियाँ एक नये निर्माता द्वारा नए मॉडल की गाड़ी उतारने के लिए अनुकूल होती हैं। अब शिव परमात्मा, ब्रह्मा को निर्माता या रचयिता के रूप में आगे रख कर भावी देवी-देवता रूपी नए मॉडल की गाड़ियों का निर्माण करने में लगे हैं। यह उस परम निर्माता का कमाल ही है कि वह पुरानी खटारा गाड़ियों के ड्राइवर को ड्राइविंग की कला सिखा कर उन्हें नई, कभी न खराब होने वाली गाड़ी का मालिक बना देता है। उसके लगभग 8000 ड्राइविंग स्कूल विश्व के 133 देशों में खुल गये हैं, जहाँ नित्य नि:शुल्क ड्राइविंग अर्थात् चरित्र निर्माण की कला सिखाई जाती है। विभिन्न कार कंपनियाँ अपनी बिक्री बढ़ाने के लिये, पुरानी कार के साथ कुछ रकम देकर, नई कार ले जाने की स्कीम लाती हैं। अब शिव बाबा भी मनुष्यों को इस पुराने, पतित व खटारा शरीर के बदले, आने वाले सतयुग में स्वस्थ, बलवान व कभी भी खराब या बीमार न होने वाले शरीर की प्राप्ति की नि:शुल्क स्कीम समझा रहे हैं।

कर्मों के कारण शरीर अपंग या अधूरा

कोई भी मोटरकार आधी अधूरी या त्रुटिपूर्ण नहीं बनाई जाती जबकि शरीर रूपी गाड़ी पूर्व जन्म के संस्कारों के अनुसार, अपंग या अपूर्ण रूप से भी जन्म ले सकती है।

मोटरकार की नियंत्रित व सुरक्षित यात्रा में दो शक्तियाँ कार्य करती हैं – मोड़ने की शक्ति व ब्रेक लगाने की शक्ति। इन दोनों शक्तियों को आत्मा 'परखने व निर्णय करने की शक्ति' के द्वारा उपयोग में लाती है। इस संबंध में शिव बाबा ने ब्रह्मा के मुख से कहा है – '**मन और बुद्धि, दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की शक्ति चाहिए। ब्रेक देने और मोड़ने की शक्ति होगी तो बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं गंवायेंगे। एनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी ... कोई बात में एक्सीडेन्ट होने के भी यही दो कारण होते हैं।**'

परम सारथी परमात्मा

विवेकवान, गुणवान, चरित्रवान आत्मा, शरीर रूपी रथ का संचालन रथी होकर भी स्वयं नहीं करती परन्तु इसकी बागडोर परमात्मा रूपी सारथी को सौंप देती है। जैसा कि अर्जुन और भगवान के संबंध में गायन है। परन्तु परमात्मा उसी रथ की ज़िम्मेवारी लेते हैं जिसके रथी (आत्मा) ने 'गुणों का अर्जन' (अर्जुन) किया हो, जिसने कर्मेन्द्रियों रूपी घोड़ों को साध रखा हो और जो परमात्मा की श्रीमत रूपी सड़क पर चलना जानता हो। साथ ही जिसने एक शिव परमात्मा रूपी सारथी की बजाय कई अन्य सारथी न कर रखे हों। एक सारथी ही साथी के रूप में, रथी को अच्छी-अच्छी मंत्रणायें दे सकता है, उसका सखा बन सकता है। आज सभी रथों पर अनेक सारथी बैठे हुए हैं, फलस्वरूप रथ दिशाहीन हो गये हैं। सर्वश्रेष्ठ सारथी 'शिव' सभी के रथों पर सारथी बनने का सामर्थ्य भी रखते हैं और स्वीकृति भी दे रहे हैं परन्तु रथी आत्माएँ इन परम सारथी के सम्मुख आयें, उसे पहचानें व स्वीकारें तो सही।

मोटरकार की लाभकारी आयु (Economic Life) मोटे तौर पर 10 साल और कार्यक्षमता 2,00,000 किलोमीटर मानी जाती है। कुदरत ने भी विभिन्न पशुओं की शारीरिक आयु का पैमाना, उनके

शारीरिक विकास (Physical Growth) में लगने वाले समय का पाँच गुणा रखा है। कुत्ता ढाई साल तक शारीरिक वृद्धि को पाता है और उसकी आयु 12-14 वर्ष तक की होती है। घोड़ा 5 वर्ष में व्यस्क हो जाता है और उसकी आयु 25 से 28 वर्ष तक की होती है। ऊंट पैदा होकर 8 वर्ष तक शारीरिक वृद्धि को पाता है और उसकी आयु 40 वर्ष होती है। यह कुदरती नियम मनुष्य के ऊपर सतयुग व त्रेतायुग में तो था परन्तु अब उसके गलत आचार-विचार व जीवन शैली ने इसे भंग कर दिया है। मनुष्य का शारीरिक विकास 20-25 वर्ष तक होता है परन्तु उसकी औसत आयु 100-125 साल से घट कर मात्र 50-55 साल ही रह गई है।

'अक्ल-मृत्यु' ही 'अकाल-मृत्यु' का कारण

आज पशु चिकित्सालय कहीं-कहीं दिखाई देते हैं परन्तु मनुष्यों के चिकित्सालय गली-गली में दिखाई देते हैं। एक ही जाति के पशुओं में झगड़ा होते शायद ही कहीं दिखाई दे (कुत्ता अपवाद है क्योंकि मनुष्यों के संग में रहता है) परन्तु मनुष्यों में भाई-चारा व आपसी शान्ति किसी एक गली में तो क्या बल्कि एक परिवार में भी दिखाई नहीं देती। आत्मा में आई संस्कारों की गिरावट ने ही बॉडी व मोटरगाड़ी, दोनों को अकाल मृत्यु के करीब ला दिया है। 'अक्ल-मृत्यु' ही 'अकाल-मृत्यु' का कारण है। सभी प्राणियों में सबसे 'अक्लमन्द' कहा जाने वाला मनुष्य आज 'अक्ल से मन्द' दिखाई पड़ता है।

ईश्वर की स्मृति से बैटरी चार्ज

मनुष्य जागृत अवस्था में एक बार में एक ही संकल्प कर सकता है परन्तु स्वप्नावस्था में अनेक संकल्प घुले-मिले होते हैं। योग (Meditation) की अवस्था में एक बार में एक ही शक्तिशाली संकल्प चलता है। योग में 'स्व' (आत्मा) विश्व के विचारों से हटकर आध्यात्मिक सत्यों में मग्न हो जाती है। शिव ही सत्य है और आत्मा का उससे योगयुक्त होना ही शरीर रूपी गाड़ी की बैटरी चार्ज होना है।

प्रकृति से द्वंद्व का गलत परिणाम

विकास करना अच्छी बात है परन्तु गलत तरीके का विकास विनाश को आमंत्रित करता है। मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो प्राय: प्रकृति के विरुद्ध चलने का दु:साहस करता है। प्रकृति उसे बार-बार सावधान करती है परन्तु वह प्रकृति से भी द्वंद्व करने को उतारू रहता है। वह बाह्य प्रकृति पर विजय भी पाता चला जाता है परन्तु अन्दर की प्रकृति का गुलाम बना रहता है, परिणामस्वरूप, अन्त में प्रकृति अपने पाँचों तत्वों द्वारा ऐसा ताण्डव करती है कि मनुष्य का सब-कुछ छिन जाता है, यहाँ तक कि शरीर भी। ऐसी स्थिति अति सन्निकट है जिससे आज का तथाकथित 'प्रकृतिजीत मनुष्य' बेखबर है। आज के 'समझदार मनुष्य' ने इस अद्भुत पृथ्वी को रहने लायक नहीं छोड़ा है। वह इसे बर्बाद करके किसी और ग्रह पर अपने को आबाद करने की योजना बना रहा है जो कि कुदरती व्यवस्था के विपरीत है व संभव नहीं है।

जो मनुष्य शरीर के ढोने के लिए मोटरकार बनाता था, वही मनुष्य अब दूसरे मनुष्यों के विनाश हेतु परमाणु बमों को ढोने के लिये रॉकेट रूपी उन्नत मोटरकार बना रहा है। जो मनुष्य शरीर रूपी वाहन की खराबी दूर करने हेतु विभिन्न दवाइयाँ व टेबलेट बनाता था वही मनुष्य इस कुदरती वाहन को खराब करने के लिए पान मसाला, गुटखा आदि बना रहा है। जो मनुष्य मोटरकार की ऊर्जा हेतु पैट्रोल, डीजल आदि का उत्पादन करता था, वही अब शरीर रूपी वाहन को ऊर्जाहीन करने के लिए शराब, बीयर, रम आदि का उत्पादन कर रहा है।

अब गति के बजाय सद्‌गति की ज़रूरत

मनुष्य की ये हरकतें थमने के बजाय बढ़ती ही जा रही हैं। मनुष्य अब तक जनसंख्या विस्फोट (Population Explosion) और

परमाणु विस्फोट (Nuclear Explosion) करता आ रहा था परन्तु अब वह विभिन्न स्वनिर्मित गाड़ियों (बस, कार, ट्रेन इत्यादि) और शरीर रूपी गाड़ी (मानव बम) में भी विस्फोट कर रहा है। वह समय दूर नहीं जब 'रचना' (मनुष्य) को निरन्तर विनाश करते देख, प्रकृति विनाश का कार्य अपने हाथों में ले लेगी परन्तु वह मनुष्यों की तरह विनाश किस्तों में ना करके एक ही बार में सारा कार्य निपटा देगी।

मनुष्य ने हर क्षेत्र में काफी अनियंत्रित गति पकड़ ली है, चाहे वह भौतिक अन्वेषण में हो, रसायन अन्वेषण में हो, ब्रह्मांड अन्वेषण में हो, चिकित्सा के क्षेत्र में हो या विज्ञान के अति परिष्कृत साधनों की खोज में हो। वह शरीर, साधनों व वाहनों को गतिशील करते-करते खुद व खुदा से काफी दूर निकल गया है। अब उसे वापस लौटने की सुध लेनी चाहिये। उसे अब गति की नहीं बल्कि सद्‌गति की चिन्ता करनी चाहिए। वह बाहर की भौतिक यात्रा बहुत कर चुका, अब उसे अन्दर की अन्तर्मुखता की यात्रा अविलंब शुरू कर देनी चाहिये। कलियुगी रात्रि की समाप्ति के पहले, अब रूहानी यात्री बनने का अन्तिम समय चल रहा है। शीघ्र ही रूहानी यात्रियों की सद्‌गति की बेला आने वाली है। 'अन्त या मतिः, सा गतिः' का गुह्य रहस्य यदि अब नहीं समझा, तो अभी का दुर्लभ समय फिर हाथ नहीं आयेगा। अभी नहीं तो कभी नहीं। शुभ कार्य में देरी अच्छी नहीं। शुभस्य शीघ्रम्।

❖

जीवन संघर्ष नहीं, हर्ष है

ब्रह्माकुमारी शकुंतला, जालना

एक व्यक्ति सांसारिक समस्याओं से जूझते हुए इतना निराश हुआ कि उसने नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या करने का विचार किया। गोलियाँ कम थी, मृत्यु की बजाय बेहोशी जैसी स्थिति में उसे आवाज़ सुनाई दी, ''तुम हार क्यों मानते हो, ऐसा क्यों नहीं सोचते कि संघर्ष का नाम ही जीवन है और देखो, हर आदमी का जीवन ही दुखों और परेशानियों से भरा है।''

उसने नज़र घुमाई तो एक पोटलियों का ढेर दिखाई पड़ा और पुनः आवाज़ आई, ''देखो, ये हर आदमी की परेशानियों की पोटलियाँ हैं, अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें तुम्हारी समस्याएँ किसी दूसरे से बदलने का मौका देता हूँ। बस, कोई दो पोटलियाँ ही खोलकर तुम्हें फैसला करना होगा।'' वह व्यक्ति खुश हो गया। वह हमेशा सोचता था कि नगर का धनाड्य व्यक्ति तो अवश्य सबसे सुखी होगा परन्तु उसके नाम की पोटली खोली तो उसमें भी चिन्ताएँ और पीड़ा ही थी। उसकी आँखों में पानी भर आया और उसने पोटली बंद कर दी।

दूसरी पोटली खोलने का उसका विचार समाप्त हो गया, उसने अपने आँसुओं को पोंछ लिया और अदृश्य आवाज़ का धन्यवाद किया। उसका नैराश्य मिट गया। **उसे समझ में आ गया कि जीवन संघर्ष नहीं है लेकिन सुखों की चाहत में अपने छोटे-छोटे दुखों को पहाड़ समान समझकर हम इसे संघर्ष बना लेते हैं। ईश्वरीय ज्ञान भी मानव को यही सिखाता है। यदि स्वयं को आत्मा समझें, देहभानजनित इच्छाओं को नियंत्रित करें, जीवन में दूसरों को देने का भाव रखें और ईश्वर से संबंध जोड़कर उसकी श्रीमत प्रमाण चलने का लक्ष्य रखें तो कठिनाइयाँ खेल समान लगने लगती हैं। जैसे माता-पिता का साया न रहने से कोई भी बच्चा बेसहारा महसूस करता है, उसी प्रकार, ईश्वर पिता से संबंध न होने के कारण ही जीवन संघर्ष लगता है, नहीं तो जीवन एक मीठा-प्यारा खेल है जिसे खेलने में हर्ष ही हर्ष है।**

धूल में छिपा हीरा

• ब्रह्माकुमार भगवान, शांतिवन

खदान में, धूल-धुसरित पड़े पत्थर को तराश-तराश कर प्रकाशमान किरणों वाला बहुमूल्य हीरा बना देने वाला निश्चय ही उच्चतम धंधा करता है परंतु इससे उच्चतम धंधा तो भगवान का है जो गरीबी, अज्ञानता, विकारों, अनैतिकता, अंधविश्वास जैसी धूल से अटे पड़े मानवीय हीरों को ढूँढकर, तराशकर, मानवीय समाज के शोकेस में प्रेरणामूर्ति के रूप में सजा देता है। प्रस्तुत है ऐसे ही एक हीरे की कहानी जिसे जन्म के बाद अपने चारों ओर गहन कालिमा के सिवाय कुछ भी न मिला। परंतु भगवान के ज्ञान की किरण कालिमा की अभेद्य बाधा को चीरकर उस चेतन हीरे के चित्त में उतर गई और वह अपनी मेहनत और लगन से प्रभु का दिलतख्तनशीन बन गया — संपादक

मेरा जन्म महाराष्ट्र के सांगली जिले के बहुत ही छोटे और सुविधाओं से वंचित गाँव में हुआ। परिवार में कोई भी पढ़ा-लिखा था ही नहीं। हम खेतों में रहते थे इसलिए 11 वर्ष की उम्र तक स्कूल देखने को ही नहीं मिला। जब इस उम्र में आया तो मेरे मन में इस प्रकार विचार आने लगे कि मैं इस धरती पर कुछ अच्छे कर्म करके जाऊँ, पर इसके लिए तो पढ़ाई चाहिए, पढ़ूँ कैसे? उन्हीं दिनों अपने खेतों में से एक बच्चे को थैला उठाए कहीं जाते हुए मैं रोज़ देखता था। एक दिन, उत्सुकतावश, मैं भी उसके पीछे-पीछे चल दिया। एक खुली जगह में पेड़ के नीचे कुछ बच्चे बैठे थे, वह भी वहाँ जाकर बैठ गया। मैं संकोच के मारे दूर ही खड़ा रहा। दयालु अध्यापक ने मुझे बुलाया, मैंने सारी बात बता दी। उसने मुझे सीधा पाँचवी कक्षा में बैठा दिया। इस प्रकार मैं रोज़ाना स्कूल जाने लगा। जब घरवालों को पता चला तो मुझे मना कर दिया। उन्हें लगा कि हमें पैसे देने पड़ेंगे। माता-पिता की आजीविका का आधार पशुपालन होने के कारण हाथ में पैसा तो होता ही नहीं था। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि पैसा नहीं माँगूगा, तो उन्होंने छुट्टी दे दी। मैंने उसी दिन दृढ़ संकल्प किया कि कभी माँ-बाप के आगे हाथ नहीं फैलाऊँगा, अपनी मेहनत से पाँव पर खड़ा होऊँगा।

लिखाई के अक्षरों में सुधार

कक्षा में नियमित जाने की मेरी लगन, शांत व्यवहार, शिक्षक के प्रति मेरा सम्मान-भाव आदि के कारण शिक्षक ने मुझे अगले साल छठी कक्षा में और उससे अगले साल सातवीं कक्षा में कर दिया। सातवीं में बोर्ड की परीक्षा होने के कारण अध्यापक ने सख्ती से कहा कि नोटबुक और पेन ज़रूर लेकर आना है। अब तक तो मैं खाली हाथ स्कूल जाता था, टीचर बोर्ड पर जो लिखता था वही बुद्धि में रखता था लेकिन अब नया प्रश्न उत्पन्न हुआ कि नोटबुक कहाँ से लाऊँ। घरवाले तो पैसे देंगे नहीं। मैंने एक कहानी पढ़ी थी कि जो चोरी करते हैं, भगवान उन्हें हाथ नहीं देता इसलिए इस वृत्ति से भी मुझे सख्त नफरत थी। माँगना भी अच्छा नहीं है तो फिर क्या करूँ? कहते हैं, जहाँ लगन होती है वहाँ रास्ता निकल आता है। मुझे एक युक्ति सूझी, मैं रद्दी वाले के पास गया। मैंने सोचा, कोई आधी लिखी नोटबुक मुझे मिल जाए तो मेरा काम चल जाए। रद्दी वाले ने उदारता से मुझे दो नोटबुक दे तो दीं पर उनमें तो सभी पन्नों पर, किसी पर

दो लाइनें, किसी पर चार लाइनें लिखी थीं। अब क्या हो? मेरे बालमन में फिर लगन की अग्नि प्रज्वलित हुई और मैंने उन पन्नों को धो डाला। स्याही से लिखे अक्षर धुंधले पड़ गए और कुछ-कुछ सफेद भी दिखने लगे। धुले हुए पन्नों को धागे से पुन: जोड़कर मैं उस नोटबुक को लेकर स्कूल चला गया।

मुझे लगा कि समस्या का समाधान हो गया परंतु नहीं, एक नई समस्या खड़ी हो गई। मैंने ज्यों ही धुले कागज़ों पर लिखा, स्याही फैल गई। अक्षरों की सुंदरता बिगड़ गई। शिक्षक ने देखा तो गुस्से में आकर डायरी को फेंक दिया। चारों तरफ कटे हुए पंखों की तरह उसके पन्ने फैल गए। पर मैं मास्टर पर तनिक भी नहीं झुंझलाया, थोड़ी आत्म-ग्लानि ज़रूर महसूस हुई। मैंने दृढ़ संकल्प किया कि जब तक अक्षर सुंदर नहीं बनाऊँगा तब तक चैन की सांस नहीं लूँगा। दसवीं कक्षा के एक बच्चे के अक्षर बड़े सुंदर थे। मैंने उससे क,ख,ग, ... ये सारे अक्षर कागज़ पर लिखवा लिए और घर में बैठकर आठ-आठ दिन तक एक-एक अक्षर को इतनी बार लिखा, इतनी बार लिखा कि कोई गिनती नहीं। दीवाली की एक मास की छुट्टियाँ मैंने इसी अभ्यास में सफल कीं। मेरे सारे अक्षर बदल गए। सुंदर बन गए। छुट्टियों के बाद टीचर ने नोटबुक देखी तो उन्हें लगा कि किसी दूसरे की लिखत है, इसकी नहीं। प्रमाणित करने के लिए उन्होंने अपने सामने ही डायरी में मुझसे अक्षर लिखवाकर देखे। मेरे सुंदर अक्षर देख वे आश्‍चर्यचकित हो गए। मैंने मास भर के अभ्यास की बात सुनाई तो बड़े खुश हुए और कक्षा में मेरी बहुत प्रशंसा की। तब से मेरे अक्षर कक्षा में प्रथम नंबर लेने लगे। उन्हीं अक्षरों की बदौलत प्यारे बाबा की मुरली बोर्ड पर लिखने का सुअवसर भी मुझे मिल रहा है। मैं अपने उस शिक्षक का दिल से आभारी हूँ।

मेधावी होने की सज़ा

आमतौर पर लोग यह चाहना रखते हैं कि वे अच्छा काम करें तो उन्हें प्रोत्साहन और सराहना मिले लेकिन 'ईर्ष्या' नामक भूत के कारण, सफलता के मार्ग में कई अवरोध आ ही जाते हैं। समझदार व्यक्ति को उनसे घबराना नहीं चाहिए बल्कि ईर्ष्या करने वालों के प्रति भी शुभ भावना रख उनके दिल में स्नेह के बीज बो देने चाहिएँ। सातवीं कक्षा की परीक्षा के दौरान मुझे भी इस भूत का सामना करना पड़ा। परीक्षा भवन में मेरे साथ 'अमीर और दादा' समझा जाने वाला मेरा एक सहपाठी भी परीक्षा दे रहा था। उसने मुझे कहा, आप अपने पेपर से नकल करने दो, नहीं तो जान से मार दूँगा। मेरी गिनती होशियार बच्चों में तो होने ही लगी थी। पास बैठे शिक्षक ने ऐलान किया, जो नकल कराएगा उसका पेपर छीन लिया जाएगा। मैं धर्मसंकट में पड़ गया। आखिरकार मैंने नकल न करवाने का फैसला किया और इस प्रकार उस 'दादा' विद्यार्थी का कोपभाजन बन गया। उसी दिन शाम को खेतों में से अकेला घर लौट रहा था तो वह चार दोस्तों को लेकर मेरे पास आया, मुझे रोका और किसी ने थप्पड़, किसी ने मुक्के मारना प्रारंभ कर दिया। कारण तो मैं जानता था पर मैंने चुपचाप सहन किया। मेरी मौन सहनशीलता को देखकर उनमें से एक की आत्मा जागी, उसने अन्य सभी को इस गलत कर्म से रोका और वे चले गए। उन्हें डर लगा कि शायद यह अध्यापक को सुनाएगा। परंतु मैंने न घर में किसी को कुछ सुनाया और अध्यापक को भी कुछ न सुनाने का निश्‍चय कर, घटना को दिल में समाकर उन्हें क्षमा कर दिया। अगले दिन स्कूल में वह विद्यार्थी ज्यों ही सामने पड़ा, मैंने मुस्कराकर उसकी तरफ हाथ बढ़ाया, हाथ मिलाया और उसका हाल-चाल पूछा। मेरे इस व्यवहार से उसका दिल भर आया। उसने अपनी

गलती स्वीकार करते हुए प्रतिज्ञा की कि मैं भविष्य में कभी किसी को दु:ख नहीं दूँगा।

सहनशीलता का मीठा फल

कहा जाता है कि बोया बीज ज़रूर फलता है और किए हुए कर्म का फल भी सामने ज़रूर आता है। मैंने अपने इस कर्म का शुभ फल 34 वर्षों बाद देखा तो हृदय गद्‌गद हो उठा। एक बार मेरे गाँव में आयोजित कार्यक्रम में मैं और गाँव का सरपंच एक ही मंच पर थे। तभी सरपंच साहब ने भरी सभा में कहा, मैं इस भाई का बड़ा कृतज्ञ हूँ क्योंकि इसी के कारण मैं सरपंच बन पाया हूँ। मैंने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा तो उसने कहा, मैं वही 'दादा' बच्चा हूँ जिसने आपको मारा था परंतु आपकी सहनशीलता और क्षमा का मेरे पर ऐसा सुंदर असर पड़ा कि मैं पूरा ही बदल गया। मेरे सद्व्यवहार के कारण ही लोगों ने मुझे सरपंच बना दिया। यह सद्व्यवहार आपकी ही देन है। इसका सारा श्रेय आपको है। इस प्रकार, मेरी सहनशीलता उसके लिए प्रेरणा बनी।

सातवीं कक्षा में मेरे 75 प्रतिशत अंक आए। आठवीं कक्षा में मैं नज़दीक के गाँव में सरकारी हॉस्टल में दाखिल हो गया जहाँ खाना-पीना-पढ़ना सब नि:शुल्क था। मेरे कई दोस्त बन गए जो कपड़ों आदि के लिए मुझे कुछ आर्थिक मदद करने लगे। नए हॉस्टल में, नए रूप में बाधाएँ मेरा पीछा करती रहीं। नवीं कक्षा में फिर प्रथम आया तो उच्च समाज के कुछ लड़कों ने मुझे धमकाया कि तू इतना क्यों पढ़ता है, पहले तो हम कक्षा में प्रथम आते थे, जब से तू आया है, हमारा नंबर कट गया, आगे से तुम्हारा नंबर आया तो जिंदा नहीं छोड़ेंगे। मैंने सोचा, पढ़ाई भी ना छूटे, जान भी बचे और दुश्मनी भी ना हो, इसका एक ही रास्ता है कि मैं हॉस्टल बदल लूँ। फिर शिक्षक को कारण बताए बिना बड़ी मुश्किल से मैं प्रमाण-पत्र ले पाया और पास के ही एक दूसरे हॉस्टल में चला गया। वहाँ मैं पूना बोर्ड के चार में से एक सैक्शन में प्रथम आया और वो लड़के उसी स्कूल में प्रथम आए। इस प्रकार वे भी राज़ी हो गए और भगवान ने मुझे और अच्छा अवसर दे दिया।

वैराग्य की उत्पत्ति

जीवन की कठिनाइयों को पार करता हुआ मैं आगे बढ़ता जा रहा था परंतु कुछ घटनाओं ने मेरे मन में ज़बरदस्त वैराग्य उत्पन्न कर दिया। एक बार मैं बहुत बीमार पड़ा तो मुझे लगा कि बीमारी में सिवाय भगवान के कोई मदद नहीं कर सकता। बीमारी से उठने के तुरंत बाद मैंने गुरु किया जिससे मुझे थोड़ा बहुत मानसिक सहारा तो मिला लेकिन कोई विशेष लाभ नहीं हुआ क्योंकि मेरा विश्वास स्वयं मेहनत करके सफल होने में अधिक था। मैंने अपने ही गाँव में अपनी ही आँखों से लुटेरे लोगों को एक गरीब आदमी को काटकर गड्ढे में दबाते देखा। मैं इसे देख डरकर भाग तो गया लेकिन घटना का प्रभाव मेरे मन पर बहुत गहरा पड़ा। इससे भी मुझे संसार ऐसे लगने लगा जैसे यह रहने लायक है ही नहीं। घर में भी पिताजी और उनके भाइयों के बीच चलने वाले खूनी झगड़ों के कारण कभी पुलिस, कभी कचहरी और कभी जेल का वातावरण बन जाता था। इस कारण भी मुझे गहरा वैराग्य आया। भाई की शादी हुई तो ससुराल वालों ने शराब पिलाकर भाई को पीटा और ज़मीन के कागज़ों पर धोखे से हस्ताक्षर करवा लिए। एक बार मैंने सूरत में दो मास कड़ी मेहनत करके दसवीं की पुस्तकें खरीदने के लिए 400 रुपये एकत्रित किए परंतु वे भी एक तथाकथित ऊँचे पद वाले व्यक्ति ने धोखे से हड़प लिए। इन सब घटनाओं को देखकर संसार के आकर्षणों से, इच्छाओं से, धन-संग्रह से, नाम-मान-शान से मैं पूरी तरह उपराम हो गया। **(क्रमशः)**

समय और शक्तियों के सदुपयोग से खुशी का खज़ाना प्राप्त होता है

बरसों के झगड़े, पल में सुलझे

• ब्रह्माकुमार किशोर, मनमाड

मुझे ईश्वरीय ज्ञान मिले डेढ़ साल हुआ है पर इस दौरान मुझे बहुत अच्छे अनुभव हुए हैं। इन अनुभवों ने मेरा और मेरे सारे परिवार का जीवन मालामाल कर दिया है। सबकी बिगड़ी बनाने वाला तो भगवान ही है जिनके हाथों में हमारे जीवन की डोर है। उस प्रभु ने हमारी बिगड़ी को इस तरह सुलझाया है कि उसके क्या कहने! एक अनुभव यहाँ बताना चाहता हूँ।

मेरे पिताजी के तीन लौकिक भाई हैं। पिताजी और उनके बीच, खेती को लेकर हमेशा झगड़े होते थे। झगड़े इतने भयंकर होते थे कि भय लगा रहता था कि पता नहीं कोई बचेगा या नहीं। कई बार सिर फूटे, कई बार घायल हुए। ये झगड़े कोई एक-दो मास से नहीं बल्कि 10 सालों से चल रहे थे और दिनों-दिन ज्यादा बिगड़ रहे थे। कई बार पुलिस स्टेशन तक जाने की स्थिति भी आई। झगड़ों के परिणामस्वरूप हम बच्चों पर बहुत बुरा असर पड़ रहा था। हम एक-दूसरे को जानी-दुश्मन समझने लगे थे। एक-दूसरे के विरुद्ध हमेशा षड्यंत्र रचते थे। हमारे दिल एक-दूसरे के लिए पत्थर बन गये थे। ऐसा लगता था कि ज़िंदगी चली जाएगी पर ये झगड़े खत्म नहीं होंगे।

इस बीच एक दिन अचानक मेरे मन में शुभ प्रेरणा आई कि मैं किसी सत्संग में जाऊँ। बाबा की कमाल देखिए, मैं जिस रास्ते से जा रहा था उसी रास्ते पर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का बोर्ड लगा हुआ था। मैं ब्रह्माकुमारी आश्रम में चला गया। वहाँ का रूहानी वायुमंडल देखकर मेरा मन बहुत प्रभावित हुआ। निमित्त बहन ने भी मुस्कराकर मेरा स्वागत किया और ज्ञान-अमृत पिलाया। ज्ञान मुझे बहुत अच्छा लगा। दूसरे दिन से सात दिन का कोर्स चालू हो गया।

कोर्स पूरा होने के बाद आश्रम से 'ज्ञानामृत' पत्रिका लेकर घर आया और रात को पढ़ते-पढ़ते सो गया। सवेरे साढ़े चार बजे ब्रह्मा बाबा फरिश्ते रूप में आये और घर में खड़े होकर मेरी तरफ देखते रहे। मैं भी उनकी तरफ देखता रहा। देखता हूँ कि बाबा अपना वरदानी हाथ ऊपर करके मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं और बाबा से सफेद-सफेद किरणें चारों ओर फैल रही हैं। मेरे तन-मन में खुशी और शक्ति का अपार संचार हो गया।

धीरे-धीरे ज्ञान मेरे जीवन में उतरना शुरू हो गया। घर के सदस्य भी धीरे-धीरे ज्ञान में आते गये। लेकिन शिव बाबा का करिश्मा देखो, जनवरी, 2007 को गाँव में आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। निमित्त बहन जी तथा अन्य भाई-बहनें भी गाँव में पधारे। सेवा पूरी होने के बाद मैं सभी को घर लेकर गया। घर में जैसे फरिश्तों की सभा लग गई। ऐसी न्यारी-प्यारी सभा देख पास-पड़ोस वाले सभी चकित हो गये। बहन जी के कहने पर मैंने अपने खेती वाले घर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी और सात दिन के कोर्स का आयोजन किया। मैंने सभी को निमंत्रण दिया। प्यारे बाबा ने सद्‌बुद्धि प्रदान की और पिताजी के बड़े तथा छोटे भाई की युगलें भी उसमें पधारीं। सभी ने प्रेम से ज्ञान सुना, सात दिन का कोर्स किया और फिर घर पर ही ईश्वरीय पाठशाला प्रारंभ हो गई।

बाद में पिताजी के छोटे भाई, उनके दोनों पुत्र भी एक के बाद एक ज्ञान सुनने लगे। प्यारे शिव बाबा के प्यार ने सब पर ऐसा जादू किया कि हमारे सारे झगड़े खत्म हो गये। हम ऐसे रहने लगे जैसे कि पहले कुछ हुआ ही नहीं था। साथ-साथ जिन-जिन को तंबाकू और गुटखे के व्यसन थे, वे भी छूट गए। अब हम सब प्रतिदिन एक साथ बड़े प्यार से मुरली सुनते हैं। बाबा ने तो जैसे हमारी बिगड़ी को बना दिया। हमारा जीवन संवार दिया। मेरे प्यारे बाबा, मैं आपका यह उपकार जीवन देकर भी नहीं चुका सकता, आपका लाख-लाख शुक्रिया! अब तो यही कहेंगे कि प्यारे भोलेनाथ बाबा, आपकी यह छत्रछाया हम भोले बच्चों पर सदा बनी रहे। ❖

आइये, रामराज्य की ओर

• ब्र.कु. डॉ. प्रेम, डेराबस्सी

आज संसार में चारों तरफ दु:ख-अशान्ति है। इसका कारण जानने के लिए हमें अपने से एक प्रश्न पूछना अनिवार्य है। प्रश्न यह है कि क्या परमपिता शिव परमात्मा ने जो नियम मानव को बनाकर दिये, उनका पालन वह कर रहा है? भगवान ने सद्‌गुणों का जो खज़ाना मानव को दिया, क्या वह उसकी रक्षा कर रहा है? ऐसा तो नहीं कि भगवान के सभी नियम भुलाकर मनुष्य ने नये नियम बना लिये हैं?

अगर ऐसा है तो यह उल्लंघन ही इंसानियत के पतन का कारण है। उदाहरण के लिए, गाय ने भूखा मर जाना अच्छा समझा परन्तु मांस नहीं खाया, शेर मर जायेगा परन्तु घास नहीं खायेगा। चिड़िया उसी घोंसले में रहती है, चूहे अपने बिलों में रहते हैं, जंगली जानवर जंगलों में, पानी के जानवर पानी में तथा घरेलू जानवर घरों में ही नियमों अनुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं परन्तु आज मनुष्य क्या से क्या कर बैठा है? सुन्दर-सुन्दर बंगले, खूबसूरत बाग-बगीचे, घूमने-फिरने के अनेक साधन, बेशुमार धन-दौलत, प्रकृति पर हर प्रकार से नियंत्रण, जल, हवा, अग्नि, गर्मी, सर्दी आदि पर साइंस के चमत्कारों द्वारा अपना स्वामित्व जताने वाला मनुष्य क्या अपने आप को निर्भय, दयालु, कृपालु, परोपकारी, स्नेही, हर्षित, सुखी, संतुष्ट तथा निर्विकारी कह सकता है? दिखावे में भले घरों में रैफ्रीजरेटर चल रहे हैं परन्तु दिलों में तो देखो, हर समय बगैर बिजली के भी हीटर जल रहे हैं।

हमारे दैवी गुणों पर विकारों की धूल जम गई है। अत: उस धूल को साफ करने पर ही हम स्वयं को पहचान सकेंगे। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, देह-अभिमान, आलस्य आदि सभी प्रकार के दुखदायी विकार हमारे जीवन में स्वयं ही आ जाते हैं। इन्हें लाने के लिये मेहनत नहीं करनी पड़ती, ये कब आ जाते हैं पता भी नहीं पड़ता परन्तु इन्हें भगाने के लिये या इनसे छुटकारा पाने के लिये मेहनत करनी पड़ती है। **परमपिता शिव बाबा ने इन विकारों पर विजय पाने का बहुत ही सहज मंत्र दिया है कि मन ही मन, चलते-फिरते, उठते-बैठते शिव बाबा को याद करने से सभी दुर्गुण छूट जायेंगे और तुम फिर से देवपद प्राप्त कर सकेंगे।**

आज भले ही हम देवी-देवताओं के चित्रों की रीस करते हैं। मेकअप करके स्वयं की सूरत उनसे भी ज़्यादा सुन्दर बना लेते हैं पर क्या सीरत भी उन जैसी बना सकते हैं? चित्रों की नकल करना तो आसान है परंतु चरित्र भी उन जैसा हो, इसके लिये बहुत मेहनत करनी पड़ेगी और वह भी अभी करनी होगी क्योंकि समय बहुत थोड़ा रह गया है। आप देख ही रहे हैं कि प्राकृतिक आपदायें भयंकर रूप धारण करती जा रही हैं। इंसानियत का नंगा नाच टेलीविजन, फिल्मों तथा मंचों पर सरेआम चलता रहता है। एक ही पिता परमात्मा की संतान आपस में अनेक प्रकार के दल बनाकर एक-दूसरे के खून के प्यासे बन पड़े हैं। हम स्वप्न तो रामराज्य के ले रहे हैं और स्थापना रावण-राज्य की कर रहे हैं। क्या रामराज्य में महंगाई होगी, अत्याचार होंगे, चोरी होगी, धोखेबाजी होगी, पार्टीबाज़ी होगी, मातपिता तथा बड़ों का अपमान होगा, भांग, अफीम, शराब, तंबाकू, जर्दा, मांस, मदिरा, रोमांस जैसे व्यसन होंगे? क्या इसे रामराज्य कहा जायेगा? नहीं भाई, नहीं। अगर आप वास्तव में ही रामराज्य चाहते हैं तो आओ, पिता परमात्मा 'राम' परमधाम से आया है हमें रामराज्य का अधिकारी बनने की ट्रेनिंग देने। वकील, डॉक्टर, मैकेनिक, पेंटर, इलैक्ट्रीशियन आदि कुछ भी बिना ट्रेनिंग के नहीं बना जा सकता। तो भाइयो और बहनों, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में स्वयं भगवान आकर मनुष्य को देवता बनने की ट्रेनिंग दे रहे हैं। अगर यकीन न हो तो स्वयं आकर देखो और विद्यालय की शिक्षाओं का फायदा ले लो।

❖